

चन्द्रशेखर 'आजाद'

(नाटक)

देवीप्रसाद धवन 'विकल'

भूमिका-लेखक

प० बनारसीदास चतुर्वेदी एम० पी०



चैतन्य प्रकाशन कानपुर

प्रकाशक
रामदुलारे बाजपेयी
अध्यक्ष चैतन्य प्रकाशन
मदनगोपाल कुलश्रेष्ठ का हाता
कृष्णनगर (दर्शनपुरवा) कानपुर

मूल्य २—५० न० पै०

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन सुरक्षित

जून सन् १९६१

मुद्रक—
वाणी मुद्रण कार्यालय
रामबाग कानपुर

चार शब्द और पांच दृश्य

सौभाग्यशाली है वे जिन्हे काशीतलवाहिनी गङ्गा के दर्शन करने का अवसर मिला है पर उनका पुण्य भी कम नहीं, जिन्होंने गगोत्री की झलक अपनी आँखों देखी है। नरव्याघ्र आजाद के दर्शन करने का सौभाग्य हमें प्राप्त नहीं हुआ पर जिस माता ने नौ महीने उन्हें कोख में रक्खा था, उसने दो बार हमारे घर पधार कर उसे पवित्र किया था।

चन्द्रशेखर आजाद विषयक नाटक के लिए चार शब्द लिखने के लिये जब बन्धुवर रामदुलारे बाजपेयी ने हमसे अनुरोध किया तो हमने यही निवेदन किया कि यह गौरव तो आजाद के किसी साथी को ही मिलना चाहिए, हम तो उसके लिए सर्वथा अनधिकारी हैं, क्योंकि स्वाधीनता संग्राम के लिए हमसे तो कोई सेवा बन नहीं पड़ी, पर बाजपेयी जी ने उत्तर दिया 'चूँकि शहीदों के श्राद्धरूपी यज्ञ के आप एक पुरोहित हैं इसलिए यह जिम्मेवारी आपकी ही है। इस तर्क से निरुत्तर होकर हमें ये चार शब्द लिखने पड़े हैं।

श्री देवीप्रसाद घवन जी ने बड़ी सीधी सादी भाषा में इस नाटक को प्रस्तुत किया है और कई बार यह सहस्रो की भीड़ के सम्मुख सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। आजाद के कुछ पुराने साथियों ने इसकी प्रामाणिकता की प्रशंसा भी की है। उत्तर भारत में चन्द्रशेखर आजाद का नाम सशस्त्र क्रान्तिकारियों की उज्ज्वल कीर्ति का प्रतीक बन गया है और उनके विषय में अनेक कपोल कल्पित घटनाएँ भी गढ़ ली गई हैं। यह सर्वथा स्वाभाविक है—प्रत्येक देश के अमर शहीदों के

(ख)

विषय में ऐसा ही हुआ करता है। फिर भी हम लोगों का कर्तव्य है कि सत्य रूढ़ी सुवर्ण पर मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश न करे। हर्ष की बात है कि धवनजी ने घटनाओं का अलौकिक या अत्युक्तिमय वर्णन नहीं किया। यह अवसर इस नाटक की आलोचना करने का नहीं और वैसा करने का अधिकार भी मुझे नहीं—पर एक त्रुटि की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। अतः मैं शहीद अशफाकुल्ला की दो पक्तियाँ उद्धृत की गई हैं—

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥

जिन्होंने मजार को चिता बना दिया है, उन्होंने दरअसल जबर-दस्त भूल की है, क्योंकि मेले मजार पर ही जुड़ सकते हैं चिता पर नहीं निस्सन्देह शहीद अशफाकुल्ला भी एक नाटक के उपयुक्त पात्र हैं।

प्रकाशक की आज्ञानुसार मैंने ये चार शब्द लिख दिए और अब मैं अपनी ओर से पाँच दृश्य पाठकों को दिखलाना चाहता हूँ

दृश्य नं० ?

बैठा बैठा डाक की प्रतीक्षा कर रहा था कि इतन में हमारा चपरासी टीकमगढ़ में डाक लाया। उसमें एक पत्र था सीतामऊ के राजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजी का। मैंने उन्हें लिखा था कि पता तो लगाइए, आजाद की माताजी जीवित है या नहीं। उन्होंने मुझे लिख भेजा कि माताजी अभी जीवित हैं और भावरा, अली-राजपुर में रहती हैं।

आजाद की शहादत के बाद सत्रह वर्ष तक माता जी घोर आर्थिक संकट सहती रही।

पाँच वर्ष तक तो आजाद के पिता जी जीवित रहे। तत्पश्चात् वे भी चले गये। माता जी दिन में एक बार कोदों की खिचड़ी बना

(ग)

लेती थी और उसे ही दोनो बार खा लेती थी । यह सुन कर हृदय को बड़ी वेदना हुई और हमने एक लेख लिखा “और हम भूल गए !”

दृश्य नं० २

आजाद की माता जी को हम साँतार नदी के तट पर स्थित हनुमानजी के उस मन्दिर पर ले गये, जहा आजाद फरार होने की अवस्था में तपस्या किया करते थे । जब आजाद के पुराने साथी मास्टर रुद्रनारायण जी ने माता जी का वह कोठरी दिखलाई, जिसमें आजाद रहते थे तो माता जी ने उसकी जमीन पर सर पटक पटक कर रोना शुरू किया । वह हृदय-विदारक दृश्य हममें से किसी से न देखा गया और सब दूर जा कर खड़े हो गये और अपने आँसुओं को रोक न सके ।

उन क्षणों का वृत्तान्त मैंने एक चिट्ठी में बहन सत्यवती जी मल्लिक को लिख भेजा । उन्होंने वह पत्र श्रीमान प० जवाहरलाल को भेज दिया और पण्डित जी ने तुरन्त ही माता जी के लिए ढाई सौ रुपये भेज दिये । जनता ने भी काफी आर्थिक सहायता दी और उत्तर-प्रदेश तथा मध्य भारत की सरकारों ने उन्हें २५—२५ रुपये महीने की दो पेन्शन कर दी, जिन्हे वे केवल तीन वर्ष ही भोग पायी ।

दृश्य नं० ३

माताजी दो बार हमारे निवाम स्थान कुण्डेश्वर पर पधारी । मानो घर बैठे तीर्थ ही हमें पवित्र करने के लिए आ गया हो । प्रथम बार वे चार दिन रही और दूसरी बार दस दिन ।

माताजी अक्सर हम लोगों को अपनी बातें सुनाती थी और आजाद के किस्से सुनाते-सुनाते फूट-फूट कर रोने लगती थी ।

एक दिन माता जी ने कहा —

‘चन्द्रशेखर छुटपन में कुछ कमजोर था । घर में गाय भैंस तो थी,

लेकिन वे दूध बहुत थोड़ा देती थी। दूध जमाने के बाद जो थोड़ा सा दूध बचता, उसमें पानी और बहुत सा साबूदाना मिला कर खीर बना देती और उसी को दिन में कई बार चन्दू को देती। कुछ दिनों बाद वह काफी मोटा हो गया। कहीं औरतो की नजर न लग जाय इस डर से मैं उसके काजल का डिठौना लगा देती। मुझे क्या मालूम था कि जिसे मैंने इतने प्यार से पाला वह मुझे इस तरह छोड़ कर चला जायगा।' इतना कह कर माता जी फूट-फूट कर रोने लगी। फिर बोली - 'चन्द्रशेखर बर्फी का बहुत शौकीन था। मैं उसे तिवारी जी की चोरी से बर्फी के लिए पैसे दे देती। उसके लिए मुझे चोरी भी करनी पड़ी।' यह कह कर माता जी फिर रोने लगी।

दृश्य नं० ४

हम लोग माताजी से आजाद के बारे में कम ही पूछते थे, क्योंकि आजाद का नाम सुनते ही वे दुखी हो जाती थी। लेकिन उन्हें आजाद के मरने की खबर कब लगी होगी और वे उस भयकर बज्र-पात के समाचार को कैसे सुन सकी होगी यह जानने की इच्छा हमारे मन में दबी हुई थी। एक दिन किसी ने पूछ लिया, 'माता जी, आपको आजाद के न रहने की खबर कब और कैसे लगी ? सुनते ही माता जी का गला भर आया। वे कहने लगी, एक दिन मैं खाना खाकर लेटी हो थी कि पड़ोस की एक स्त्री आई। वह कुछ उदास सी थी। मैंने पूछा, 'आज तुम ऐसी शक्ल क्यों बनाये हो ? किसी से लड़ाई हो गई है ?' पहले तो वह बोली नहीं, बाद में बहुत जिद करने पर उसने रोते हुए कहा, 'आजाद भइया नहीं रहे।' मरी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। मैंने माथा पटक पटक कर रोना शुरू कर दिया, जिससे एक आँख में गलाव आ गया। बाद में उस आँख को

निकलवा देना पडा । 'चन्द्रशेखर को एक आख तो दे दी, लेकिन प्राण नहीं दिये गये ।' इतना कह कर माता जी रोने लगी । हम लोगो की आखो मे आसू आ गये ।

दृश्य नं० ५

माता जी के पाच सन्तान हुई थी उनमे चार पहले ही स्वर्गवासी हो चुकी थी । बडा लडका तो पोस्टमैन बन चुका था और उसका विवाह करने के लिये वे उत्ताव के निकट अपने ग्राम बदरका को आने ही वाली थी कि वह चल बसा । आजाद की शहादत के बाद माता जी की कोख विलकुल सूनी हो गई । भला हो भाई भगवानदास जी माहोर तथा साथी सदाशिव जी का जिन्होंने माता जी के अन्तिम दिनो मे उनकी भरपूर सेवा की । तीर्थ यात्रा करने की उनकी जो इच्छा थी वह भी पूरी हो गई । माता जी बराबर इस भूम मे रहीं कि आजाद कही छिप गया है और वह लौट आवेगा । पर जिस दिन वे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क मे पधारी और वह स्थान उन्हे दिखलाया गया, जहा आजाद का बलिदान हुआ था, तब उनको विश्वास हो गया कि उनका बेटा आजाद अब नहीं लौटेगा और तब वे खूब फूट फूट कर रोई ।

माता जी की अन्तिम इच्छा यही थी कि आजाद के जन्म स्थान पर इनका कोई स्मारक बन जाय जिससे वहा की आस पास की साधनहीन जनता की कुछ सेवा हो सके ।

आजाद की शहादत को ३० वर्ष हो चुके । मध्य प्रदेश बडा धन धान्य समृद्ध है । आयोजनाओ पर वहा करोडो रुपये खर्च हो रहे है ।

(च)

वहा की भूमि रत्न-गर्भा है-----होरा जवाहरा की वहा खाने है---
पर जिस झोपडी मे नररत्न चन्द्रशेखर का जन्म हुआ वह जीर्ण
अवस्था मे ज्यो की त्यो खडी है ।

यही है हमारा स्वाधीनता प्रेम और यही है हमारी कृतज्ञता ।

६६ नार्थ ऐवेन्यू }
नई दिल्ली
७-६-६१

बनारसीदास चतुर्वेदी

नाटक के विषय में

सन् १९३०-३१ के विप्लवकारी दिनों में जब मैं फैजाबाद जेल में था उस समय सहसा एक दिन पं० चन्द्रशेखर आजाद के अलफ्रेड पार्क में शहीद होने का हृदय विदारक समाचार मिला। विस्तृत समाचार उस समय मिल सका जब 'तिकडम' से दैनिक 'लीडर' की एक प्रति जेल के अन्दर आ गई। उसमें आजाद-नाटबावर युद्ध का चित्र भी था। हृदय रो पड़ा। न जाने कितनी स्मृतियाँ हरी हो उठी।

कानपुर में ही बहुत बार अमर शहीद आजाद से मिलने-जुलने तथा साथ बैठने का अवसर प्राप्त हुआ था। पं० चन्द्रशेखर आजाद को वे ही समझ सकते हैं जिन्हें कभी दो घड़ी के लिए भी उनके दर्शन करने का अवसर मिला हो। कानपुर में प्रायः वे भाई प्यारेलाल अग्रवाल तथा श्री रामचन्द्र मुसद्दी के घर रहा करते थे। जब आजाद जीवित थे तभी कोई उनके जीवन का मूल्य न आक सका और आज किसमें साहस है उस नर-केसरी के मूल्यांकन का। यह पुस्तक स्व० प्यारेलाल अग्रवाल तथा भाई रामचन्द्र मुसद्दी को ही समर्पित करता हूँ।

प्रस्तुत नाटक में कोई भी घटना कल्पित नहीं है। किसी घटना को अणु मात्र भी बढ़ा कर नहीं लिखा गया है। इसका प्रमाण स्वयंमय मैं हूँ जिसने उन दिनों लेखनी त्याग कर उक्त आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया।

मैं श्रद्धेय पं० बनारसी दास जो चतुर्वेदी का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय मेरी इस कृति को दे कर इसकी सुन्दरता में चार चाद लगा दिए। उक्त भूमिका से पुस्तक गौरवन्वित हो गई है।

पात्र-पात्री

चन्द्रशेखर आजाद	सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी
रामप्रसाद बिस्मिल	काकोरी के शहीद
राजेन्द्र लाहिड़ी	” ”
रोशन लाल	” ”
अशफाकुल्ला	” ”
भगत सिंह	सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी
राजगुरु	भगतसिंह के सहायक
सुखदेव	भगतसिंह के सहायक
पं० जवाहरलाल नेहरू	देश के कर्णधार
नाट वाबर	सुपरिटेण्डेंट पुलिस
सेठ जी	आजाद के हितैषी
सेठानी जी	आजाद की आश्रयदात्री
मदनमोहन मालवीय	देश के सुप्रसिद्ध नेता
मोतीलाल नेहरू	देश के सुप्रसिद्ध नेता

कांग्रेस स्वयं सेवक, पुलिस कास्टेविल, एसेम्बली के सदस्य आदि ।

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

[नेपथ्य से 'भारतमाता की जय हो' 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' 'स्वतन्त्र भारत जिन्दाबाद' के नारे लगाता हुआ स्वतन्त्रता दिवस का जलूस निकल रहा है ।]

एक नेता

आज स्वतन्त्रता दिवस है, आज सदियों की गुलामी के बाद हम स्वतन्त्र हुये हैं, यह आजादी हमको बहुत मँहगी पडी है । देश की बलिवेदी पर जिन वीरो ने अपने प्राणों की भेंट चढाई है आज सर्व प्रथम आपको उन्हें श्रद्धाजति भेंट करना है ।

एक व्यक्ति

• महात्मा गान्धी !

सब

: जिन्दाबाद

दूसरा व्यक्ति

: पण्डित नेहरू !

सब

: जिन्दाबाद

तीसरा व्यक्ति

सरदार पटेल !

सब

: जिन्दाबाद

चौथा व्यक्ति : मोतीलाल नेहरू !
 सब : जिन्दाबाद
 नेता : भाइयो, इस अवसर पर आप उन लोगों को न भूल जाँय जिन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर इस स्वतन्त्रता के रथ को खीचा है। अपने रक्त से इस देश की बलिवेदी को सीचा है। बोलिये, एक बार प्रेम तथा श्रद्धा के साथ बोलिये 'सरदार भगत सिंह—
 सब : जिन्दाबाद
 नेता जी : अमर शहीद जतीनदास !
 सब जिन्दाबाद
 नेता जी : झासी की रानी !
 सब : जिन्दाबाद
 नेता जी : चन्द्रशेखर आजाद !
 सब जिन्दाबाद

['चन्द्रशेखर आजाद 'जिन्दाबाद' के नारे लगाता हुआ जलूस आगे बढ़ जाता है।]

[फलाट का फटना]

[स्वतन्त्रता-दिवस की सभा हो रही है। एक नेता जी भाषण दे रहे हैं।]

नेता जी : चन्द्रशेखर आजाद। मैं कहता हूँ कि चन्द्रशेखर आजाद का नाम भारत के

इतिहास में, राजनीति के इतिहास में तथा आजादी की लड़ाई के इतिहास में सदा अमर रहेगा । इतने बड़े नेता— इतने बड़े व्यक्तित्व तथा उनके महान कार्यों से जिस दिन देश भली भाँति परिचित होजायगा उस दिन प्रेम, प्रशंसा तथा श्रद्धा के आँसुओं से आप उनकी सही पूजा कर सकेंगे । चन्द्रशेखर

आजाद—

सभी

: जिन्दाबाद

नेता जी

: हाँ, तो मैं कहने जा रहा था कि जिस समय देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई का श्रीगणेश जलियानवाले बाग के हत्या-काण्ड से हुआ था उस समय चन्द्रशेखर आजाद एक उठते हुए नवयुवक थे— चन्द्रशेखर आजाद ने उस काण्ड को निकट से देखा, समझा और अपनी भावनाओं को प्रगति दी—

[फलाट का फटना]

अङ्क प्रथम

द्वितीय दृश्य

[अमृतसर की एक गली । खदर पहिने हुये एक नवयुवक का प्रवेश]

नवयुवक : ओह राजभक्ति का ऐसा भीषण पुरस्कार ।
हमारी आशाओ का खून, स्वराज्य के
बदले रौलट कानून ठीक है, हम गुलाम
है, ससार मे हमारी कोई हस्ती नही,
हमारी कोई सुनवाई नही ।

हम भेड व बकरी से भी गुजरे हुए बेकाम
संसार में कुछ मूल्य न उसका जो है गुलाम

[घबड़ाये हुये एक और नवयुवक का प्रवेश]

दूसरा नवयुवक . गजब हो रहा है चन्दू भइया, जलियान
वाले बाग मे जिस सार्वजनिक सभा की
घोषणा हुई थी उसे सरकार ने दफा
१४४ लगा दिया है---अब क्या होगा—
अब क्या होगा ।

पहिला नवयुवक : तो फिर—तो फिर !

दूसरा जनता जोश मे है । वह वहाँ पर सभा
करने के लिये तुली हुई है । आज न जाने

क्या होने वाला है भइया—हम क्या करे—
हमको क्या करना चाहिये ।

पहिला नवयुवक : क्या करना चाहिए ? हमको अब ई ट का
जवात्र पत्थर से देना पड़ेगा । इस ब्रिटिश
सरकार से डट कर लोहा लेना पड़ेगा
अब सहन नहीं हो सकता, अब सहन नहीं
हो सकता ।

अब न बाकी बलबलें हैं और न अरमानों की भीड़
एक मर मिटने की हसरत अब दिले बिसमिल में है

दूसरा नवयुवक : किन्तु यदि सभा में गडबडी हुई ।

पहिला नवयुवक यदि देश की आजादी चाहते हो रमेश तो
लाठियो और डण्डो के सामने अपने सीने
खोल देने पड़ेगे । माताओ को अपने बेटो
की लाशो पर आँसू बहाने के लिये तैयार
होना पड़ेगा, पत्नियो को वैधव्य का
श्रृङ्गार धारण करने की आशा
लेकर आगे बढना पड़ेगा और नवयुवको
को सिर में कफन लपेट कर बलिवेदी
पर उतरना पड़ेगा । किसी देश को
आजादी माँगने से नहीं मिला करती
रमेश । उसके लिये भारी से भारी मूल्य
चुकाना पड़ता है ।

दूसरा नवयुवक : हमको वह मूल्य चुकाना ही पड़ेगा चन्दू

भइया । अच्छा तो फिर मैं सभा की ओर चला ।

पहिला नवयुवक : हाँ जाना ही चाहिये । इस प्रकार कायरों की भाँति हम कब तक अत्याचार सहन करेंगे । आज आजादी की लड़ाई हमको पुकार रही है हमको आगे बढ़कर अपनी कुरबानी देनी चाहिये । तुम चलो रमेश । मैं भी आने की चेष्टा करूँगा ।

[दूसरा नवयुवक चला जाता है]

पहिला नवयुवक . देश की आजादी ! किन्तु अब सहन नहीं हो सकता । इन विदेशियों ने हमको मोम का समझ रक्खा है । हम उनको बतला देंगे कि भारतवासी भी अपने मुल्क पर मरना जानते हैं, अपनी आजादी लेना जानते हैं । किन्तु हम निशस्त्र हैं—हमारे लिए अहिंसा की लड़ाई सर्वोत्तम मार्ग है । हम—हम—किन्तु अब सभा का समय हो रहा है । आज कुछ होकर ही रहेगा । हम भेद और बकरी नहीं हैं । हम भी वतन पर मरना जानते हैं । बन्देमातरम् ।

[चला जाता है]

प्रथम अङ्क

तृतीय दृश्य

[जलियान वाले बाग का दृश्य । सभा हो रही है]

नेता

: हमने यूरोप की युद्ध भूमि में प्राण दिए,
हमने गली गली भीख माँग कर युद्ध के
लिए चन्दा एकत्र किया, हमने तन, मन,
धन से योग देकर अपनी राज भक्ति का
प्रगाढ़ परिचय ससार को दिया, किन्तु
इन अंग्रेजों से, इस विदेशी सरकार से
इस एहसानफरामोश हुकूमत से जानते
हो हमको क्या मिला हमको मिला है
रौलट कानून हमको अब अपनी फरि-
याद भी सुनाने की आजादी नहीं रही,
हमको अब अपने अधिकारों की भी अपने
प्रभुओं को याद दिलाने की आजादी नहीं
रही । भाइयों, इस गोरी सरकार ने, इस
विदेशी शासन ने हमारी रही सही
स्वतन्त्रता भी हमसे छीन ली है । लेकिन
हम अब सचेत हो गए, सोती हुई निद्रा
से जाग गये हैं, अब हम मुँह बन्द करके

नहीं रह सकते स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हम अब उसको लेकर ही रहेंगे हम जानते हैं भाइयो कि हम पर दमन होगा हम जेलों में ठूँस दिये जायेंगे किन्तु मैं कहता हूँ कि यह सारा देश क्या हमारे लिए एक बड़ा भारी जेलखाना नहीं है। अब हम अपनी जुबानों पर ताला नहीं लगा सकते, हम प्राणों को हाथ में लेकर आगे बढ़ेंगे, हम जेलों को भर देंगे। लाठियाँ और डण्डों को अपने मिरो पर वीरता के साथ झेलेगे—जवानों आगे बढ़ो और इस नौकरशाही की गोलियों के सामने अपना सीना तान दो—

[सहसा गोलियों की आवाज सुनाई पड़ने लगती है]

नेता : बैठ जाओ, जवानों, आज देश के प्रति कुरबानी की हम पहिली किस्त चुकायेंगे। भागो नहीं—भागो नहीं—

[धुँआधार गोलियाँ चलने लगती हैं। लाशें गिरने लगती हैं]

(जेनरल डायर का प्रवेश)

जेनरल डायर : भूत दो, खबरदार कोई भागने न पाए। मारो, मारो, बागी-बागी इन बागियों को—इन काले कुत्तों को मार कर बिछा दो। इसे मारो—उसे मारो—सब तरफ से घेर लो, हा हा हा हा—शैतान—हा हा हा—

[लासो से भूमि पटने लगती है]

जेनरल डायर : आ हा हा हा । होम रूल माँगता है ।
काला आदमी कही का । हमने जर्मन को
हराया, हमारा मुकाबिला दुनियाँ में कौन
कर सकता है ।

[दो नवयुवक आते हैं]

एक नवयुवक : अरे जरा तो इन्सानियत से काम लो ।
इस देश के रहने वाले भी तो इन्सान
ही हैं—

जेनरल डायर : पकड़ लो इस बदमाश को । गोली
मार दो—

[सिपाही युवक को पकड़ लेते हैं]

दूसरा युवक : इस नौकरशाही से डरना नहीं रमेश ।
हम सर पर कफन लपेट कर निकले हैं ।
स्वराज्य हमारा अधिकार है । हम इस
प्रकार की धमकियों तथा अत्याचारों से
डरेगे नहीं—

[जेनरल डायर उसको गोली मार देते हैं]

जेनरल डायर : हा हा हा हा । ले जाओ इसको जेल ले
जाओ । इसका कोर्ट मार्शल होगा ले
जाओ ।

[सिपाही उस युवक को ले जाते हैं]

जेनरल डायर • होम रूल लेगा । क्या समझता है ?

सिपाही यह हुजूर यह शहर की दीवारों पर
मीटिंग के नोटिस चिपका रहा था ।

[डायर उसके ठोकर मारता है]

डायर : डैम, बागी है । इसके कोड़े लगाओ ।

[सिपाही उसके कोड़े लगाता है]

नवयुवक आह, भारतमाता की जय । दुष्टो इस
दमन का परिणाम एक दिन रङ्ग लायेगा
आह,—पानी—

[सिपाही उसके फिर कोड़े लगाता है । नवयुवक बेहोश होकर
गिर जाता है ।]

डायर • चलो, शहर मे जो भी हिन्दुस्तानी दिख—
लाई दे बिना पूछे गोली मार दो । होम
रूल लेगा ? डैम—बदमाश कही का ।

[डायर के साथ सिपाही चले जाते है । घायलो की कराह के साथ
परदा गिरता है]

प्रथम अंक

चतुर्थ दृश्य

[बनारस जेल का दृश्य । अदालत लगी हुई है]

मजिस्ट्रेट मुल्जिमों को हाजिर करो ।

[चपरासी जाता है और थोड़ी ही देर में एक नवयुवक को लाता है]

मजिस्ट्रेट . तुम्हारा क्या नाम है ?

नवयुवक : आजाद ।

मजिस्ट्रेट तुम्हारे बाप का नाम ?

नवयुवक स्वतन्त्र ।

मजिस्ट्रेट यह कैसा नाम ? हम तुम्हारे बाप का नाम पूछते हैं ।

नवयुवक स्वतन्त्र ।

मजिस्ट्रेट : पेशा ?

नवयुवक : देश भक्ति ।

मजिस्ट्रेट : स्थान ?

नवयुवक : हिन्दुस्तान

[मजिस्ट्रेट क्रोध से मेज पर हाथ पटकता है]

मजिस्ट्रेट

वेल तुमको मालूम होना चाहिए कि यह अदालत है ।

नवयुवक

. मै इस अदालत को अदालत नहीं मानता यह न्याय का परिहास है । विदेशियो को हम पर शासन करने का कोई अधिकार नहीं । हम आपकी अदालत को अदालत नहीं मानते ।

मजिस्ट्रेट

बदमाश । हम तुमको फाँसी दे सकता है जानता है ।

नवयुवक

हम सब आपकी धमकियो से नहीं डर सकते । मै पूछता हूँ कि आप हम मे से कितनो को फाँसी के तखतो पर लटका कर अपना शासन कायम रख सके गे । आज जो आग देश के कोने कोने मे भड़क उठी है उसको बुझाना अब आपकी शक्ति से बाहर की बात हो गयी है । भारतीय अब न तो आपके शासन को ही सहन कर सकते है और न इस अदालत को ही हम न्यायपूर्ण अदालत मान सकते है ।

मजिस्ट्रेट

. ओह हम इस मुल्क को तोपो से उडा सकते है ।

[नवयुवक ठहाका लगाता है]

नवयुवक : अब देश-भक्ति को धधकती आग तोपों से न बुझाई जा सकेगी । हम आपकी तोपों के सामने अपने असंख्य सीनो को अड़ा कर उन्हें बेकार सिद्ध कर देंगे । हमारी लड़ाई न्याय की लड़ाई है ।

हम सत्य अहिंसा से इस जग को हिला देंगे,
अब तक जो असम्भव था सम्भव बना देंगे ।
भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना,
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना ।

मजिस्ट्रेट ओह यह बकवास बन्द कर । सिपाहियों इसे जेल में ले जाकर कोड़े लगाओ ले जाओ ।

नवयुवक यही बकवास एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिला देगी, विदेशी शासन के कफन में कीले ठोक देगी । अच्छा बन्देमातरम्

[सिपाही नवयुवक को ले जाते हैं]

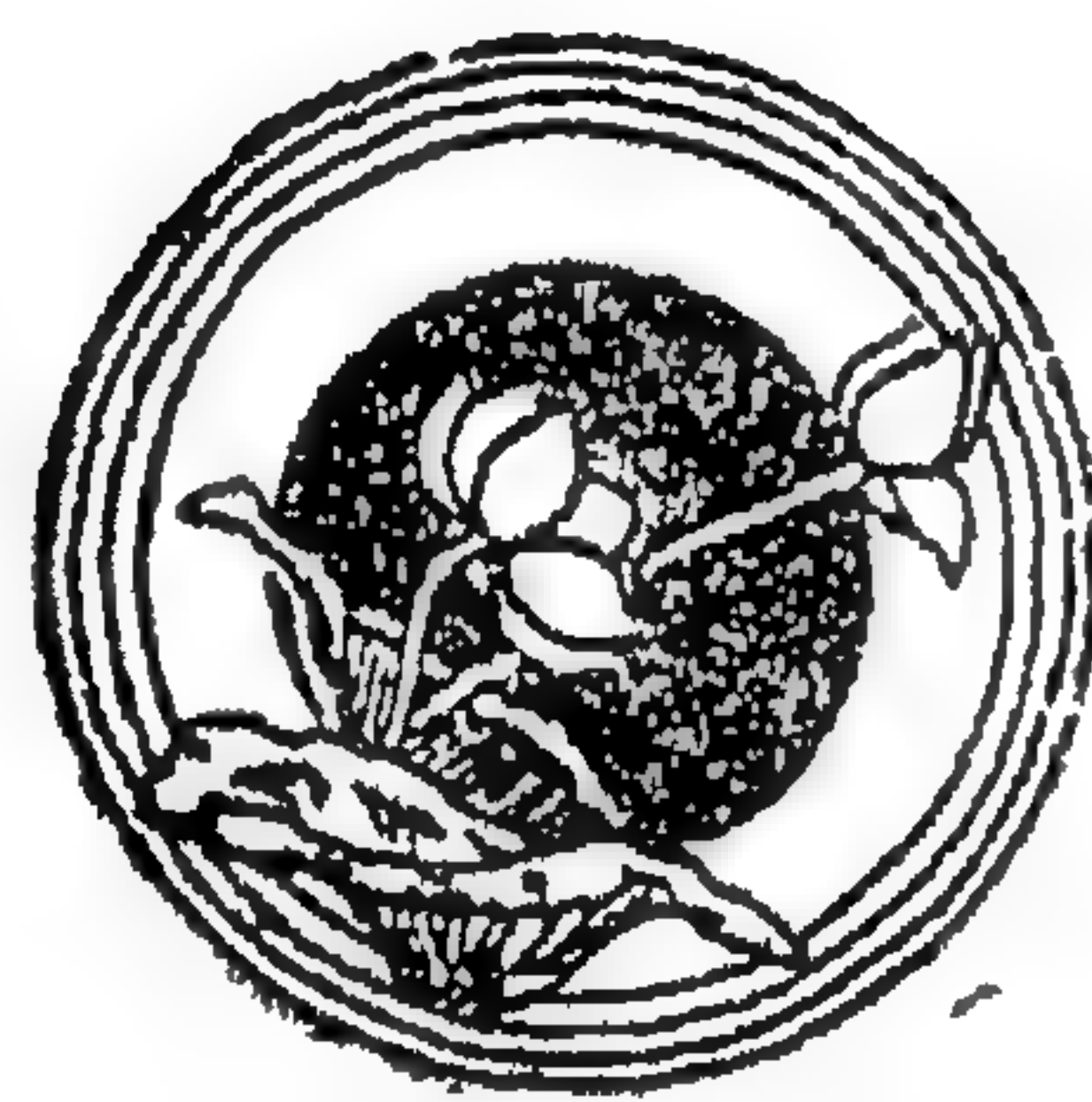
मजिस्ट्रेट • इस बदमाश ने मेरा दिमाग खराब कर दिया है । अच्छा अब दूसरे मुल्जिम को पेश करो ।

[सिपाही एक वृद्ध को लाते हैं]

- मजिस्ट्रेट तुम्हारा नाम ?
- वृद्ध : गङ्गाराम
- मजिस्ट्रेट तुम बागी है । हम तुमको सजा देता है ।
- वृद्ध : हुजूर मैं बागी नहीं हूँ । सरकार का खैरख्वाह हूँ । ये सिपाही हमको घर से पकड़ लाये हैं ।
- मजिस्ट्रेट . ओह तुम बागी है । सारा हिन्दुस्तान बागी है । हम तुमको दो साल की सजा देता है । ले जाओ ।
- वृद्ध : हुजूर मैं तो—
- मजिस्ट्रेट : नहीं सुनना चाहता । दो साल का सजा ले जाओ ।
- सिपाही : यह मुलजिम नहीं है हुजूर । आपकी मोटर के ड्राइवर का बाप है । वह गलती से पंजाब में पकड़ लिया गया है । यह उसकी फरियाद लेकर आया है ।
- मजिस्ट्रेट : ओह हम आज कुछ नहीं सुनना मांगता । इसका लड़का पंजाब में क्यों पकड़ा गया । हम इसको सजा देगा । ले जाओ ।

[सिपाही वृद्ध को ले जाते हैं]

मजिस्ट्रेट : वागी, ये वागी हमारी ताकत को नहीं जानते । हमने जर्मन को हराया है । हमारी ताकत, हमारी पुलिस, हमारी तोपे—हा हा हा अब हम जा रहा है । जितने मुलजिम बाकी रह गये हैं । सब को दो दो साल की सजा सुनाई जाती है ।



प्रथम अंक

पंचम दृश्य

[अमृतसर की एक सड़क । फौज का पहिरा लगा हुआ है । एक व्यक्ति हाथ में दवा की शीशी लिए हुये आता है । सिपाही बन्दूक तानता है]

सिपाही : खबरदार वहीं रुक जाओ । इधर आने जाने की इजाजत नहीं है ।

व्यक्ति : अरे भाई मेरा बेटा मर रहा है । मैं उसके लिये दवा लेकर जा रहा हूँ । उसकी हालत खराब है ।

सिपाही : नहीं, सरकारी हुक्म है । कोई हिन्दुस्तानी इधर से नहीं जा सकता ।

व्यक्ति : लेकिन मेरा बेटा मर रहा है ।

सिपाही : मरता है तो मर जाने दो । उसके मर जाने से ब्रिटिश हुकूमत में कोई कमी न आ जायगी ।

व्यक्ति : दया करो, रहम करो, वह मेरा इकलौता बेटा है । रात भर बिना दवा के तड़पता रहा है । ईश्वर के नाम पर—

सिपाही . चुप रह ईश्वर के बच्चे । आगे बढ़ा तो—

व्यक्ति ओह, ब्रिटिश राज्य मे इतना अन्धेर,
बेटा मर रहा है । बाप को दवा भी ले
जाने की आज्ञा नही । धिक्कार है इस
गुलामी पर—

इस गुलामी से तो मरना लाख बार कबूल है,
जुल्म और अन्याय सहना अब सरासर भूल है ।

सिपाही : पकड़ लो इसे यह अंग्रेजों के खिलाफ
बात करता है ।

दूसरा सिपाही : पकड़ने का नही आज तो गोली मार देने
का हुक्म है ।

व्यक्ति : मार दो, गोली मार दो, इस दमन, इस
अत्याचार तथा इस जुल्म से तो मर जाना
ही अच्छा है । दमन से ही हमारी आखे
खुल रही है । जिस ब्रिटिश हुकूमत के
लिए हमने अपना तन, मन, धन सभी
कुरबान किया उसका इस देश के वासियो
के साथ ऐसा घृणित व्यवहार ?

सुखरू होता है इन्सा सख्तिशां सहने के बाद
रङ्ग लाती है हिना पत्थर से पिस जाने के बाद
गुल्ल चढ़ायेँगे लहद पर जिनसे यह उम्मीद थी,
वे ही पत्थर रख गए सीने पे मर जाने के बाद

सिपाही : चुप रह गुलाम
[गोली मार देता है]

व्यक्ति : आह, बेटा बेटा ।
[एक सिपाही लात मारता है]

सिपाही : मर कमीने
व्यक्ति : आह, मैं मर रहा हूँ मगर मगर—

करुणाकर भगवान तुम सुनना मेरी दाय ,
इस अंग्रेजी सरकार का सर्वनाश हो जाय ।

[मर जाता है सिपाही ठहाका लगाते है]

एक सिपाही रामसिंह—इस लाश को दरिया मे जाकर
फेक दो ।

[एक सिपाही लाश को घसीट कर ले जाता है]

[सूटेड बूटेड एक बाबू को प्रवेश]

सिपाही ठहरो उधर जाने का हुक्म नहीं है :

बाबू मैं सरकारी नौकर हूँ । अपनी ड्यूटी
पर जा रहा हूँ ।

सिपाही तू कोई भी क्यों न हो उधर नहीं जा
सकता ।

बाबू मुँह सभल कर बात करो जी—

[सिपाही—उसके मुह पर थप्पड़ लगाता है]

सिपाही ले परसाद । अब तेरा दिमाग ठीक हो गया । मैंने कह दिया कि इधर से हिन्दु-स्तानियो को जाने की इजाजत नहीं है ।

बाबू मगर मुझे सरकारी दफ्तर जाना है ।

सिपाही . अगर जाना है तो पेट के बल रेंग कर जाना पड़ेगा ।

बाबू : कैसे ?

[सिपाही उसे धक्का मार कर गिरा देता है और पेट के बल कर देता है]

सिपाही ऐसे । इस तरह पेट के बल रेंग कर चले जाओ पट्ठे ।

[बाबू पेट के बल रेंग कर जाता है । सिपाही हँसते है । बाबू सड़क के पार जाकर खड़ा होकर कुछ सोचता है]

बाबू : इतना अपमान । हमारा बश कितना राज-भक्त प्रसिद्ध है उस पर भी यह हमी पर अत्याचार । धिक्कार है हम लोगो को—सचमुच विदेशी सरकार कभी अपनी नहीं हो सकती । यह सूट बूट, धिक्कार है इस वेश भूषा की । अब तो आखे खुल

गयी है । आज निर्वाण है—अब देश के
लिये ही यह शेष जीवन व्यतीत होगा ।
सरकारी नौकरी को आज ही से
नमस्कार ।

वतन के होंगे हम और आज से अपना वतन होगा ,
मरेंगे तो बदन पर अब स्वदेशी ही कफन होगा ।



प्रथम अंक

षष्ठी दृश्य

[बनारस जेल । आजाद टिकटी पर बँधे हुए हैं तथा एक व्यक्ति कोड़ों लगाने के लिए प्रस्तुत खड़ा है]

[एक पुलिस अधिकारी का प्रवेश]

पुलिस अधिकारी : चन्द्रशेखर, मजिस्ट्रेट ने खुश होकर तुम को छोड़ देने का हुक्म दिया है । शर्त यह है कि तुमको लिखकर माफीनामा पेश करना पड़ेगा ।

[चन्द्रशेखर हँसता है]

चन्द्रशेखर : आप उनसे जाकर कह दीजिए कि मुझे उनकी किसी भी तरह की कोई शर्त मजूर नहीं है ।

पुलिस अधिकारी : खूब अच्छी तरह से सोच लो चन्द्रशेखर । क्यों अपनी जिन्दगी बरबाद करोगे । कोड़ों की मार से शायद जानकारी तुम नहीं रखते । नादानी मत करो ।

चन्द्रशेखर : आप अपना काम करिए, मैं अपना काम कर रहा हूँ । आप अपने इस सड़े हुये

उपदेश को अपने ही तक रखिये । आप भी हिंदुस्तानी है । क्या आपको यह शोभा देता है कि आप अपने ही मुल्क के साथ गद्दारी करे ।

[पुलिस अधिकारी क्रोध में भरता है]

पुलिस अधिकारी जमादार, अपना काम शुरू करो । अभी दो ही कोड़ों में इसकी अकल रास्ते पर आ जायगी ।

[जमादार कोड़ा लगाता है]

चन्द्रशेखर वन्देमातरम्

[जमादार फिर कोड़ा लगाता है]

चन्द्रशेखर वन्देमातरम्

[शरीर से रक्त बहने लगता है । फिर भी जमादार कोड़ा लगाता है]

चन्द्रशेखर वन्देमातरम्

जमादार कोड़े लगाता है और हर बार चन्द्रशेखर ‘वन्देमातरम्’ कहता है । धीरे धीरे वह बेहोश हो जाता है । फिर भी कोड़ों की क्रिया पूरी की जाती है]

पुलिस अधिकारी - अब इसको जेल के अस्पताल में पहुँचा दो ।

[जमादार उसे टिकटी से खोल कर स्ट्रैचर पर रखता है और जेल के अस्पताल ले जाता है]

प्रथम अङ्क

सातवां दृश्य

[जन पथ पर जनता का जलूस]

(गाना)

जयति जयति भारतवर्ष देश

क्यों माता तेरा मन मलीन क्यों माता तेरा रूखा वेष

यद्यपि तेरा दिव्य कान्ति मलिन हो गया है आज,

चहुँ दिश घनघोर घटा दुःख की छाई है आज ।

हम मिटायेगे मा तेरी कालिमा है मनुष्य नहि तो भेष,

साधन मम धन्य जननि धन्य भारतवर्ष देश ॥

जयति जयति जन्म भूमि धन्य भारतवर्ष देश,

क्यों माता तेरा मुख मलीन क्यों माता तेरा रूखा वेष ।

सभी : भारतमाता की जय हो

सभी : महात्मा गांधी की जय हो

एक नेता : भाइयो हम देश की आजादी के लिये लड़ रहे हैं, हमारी लड़ाई अहिंसात्मक है, हम पर गोलियों और लाठियों की वर्षा हो किन्तु हम शान्त रहेंगे । अहिंसा के पथ पर ही चलकर हमारी विजय होगी ।

हम स्वराज्य प्राप्त करेंगे । यदि पुलिस तुम्हारे ऊपर लाठी चलाये तो तुमको अपने ही स्थान पर खड़े होकर शान्ति-पूर्वक उस प्रहार को सहन करना है । लाश गिर जाय किन्तु पीछे कदम हटाना कायरता है । बोलो, एक स्वर से बोलो बन्देमातरम ।

[दलबल सहित पुलिस कप्तान का प्रवेश]

पुलिस कप्तान : जलूस भग करो । यह जलूस गैर कानूनी है ।

नेता . यह हमारा देश है । हमको जन्म सिद्ध अधिकार है कि हम स्वतन्त्रता के साथ विचरण कर सकें । आप हमको रोकने वाले कौन होते हैं ।

पुलिस कप्तान : जलूस भग करो । मैं कहता हूँ कि जलूस भंग करो । मैं तुम्हें दो मिनट का समय देता हूँ ।

नेता . जलूस भंग न होगा ।

पुलिस हम लाठी चार्ज करेंगे ।

नेता आप कर सकते हैं ।

[कप्तान दो मिनट तक खड़ा रहता है]

कप्तान : सिपाहियो, जलूस भग करो ।

[पुलिस लाठी चलाती है । नौजवान डटे रहने है ।
बहुत से घायल होकर गिर जाते हैं]

कप्तान इस बदमाश नेता को गिरफ्तार करो ।

[पुलिस नेता के हाथों में हथकड़ियाँ डाल देती है]

नेता मनुष्यता के नाते इन घायलों को तो
अस्पताल में पहुँचाने का प्रबन्ध कर
दीजिये ।

कप्तान चुप बदमाश

[नेता के गाल पर तमाचा लगाता है]

नेता क्या यही है तुम्हारी सभ्यता ? संसार में
अपनी सभ्यता का डका पीटने वाली
गोरी जाति के ये काले कारनामे ?

[कप्तान उसके हट्टर लगाता है]

नेता आपके अत्याचारों से अब हम नहीं डरते ।
किन्तु याद रखना कि यह अत्याचार एक
दिन रग लायेगा ।

[पुलिस कप्तान नेता को हट्टर लगाने के लिये फिर उधृत होता है
किन्तु सहसा एक नवयुवक आकर कप्तान के गोली मार देता है]

नवयुवक खबरदार नीच

सिपाही पकड़ो, पकड़ो—

नवयुवक खबरदार जो किसी ने आगे बढ़ने की
चेष्टा की । बन्देमातरम् ।

[जल्दी से एक ओर चला जाता है]

प्रथम अंक

आठवां दृश्य

[बनारस जेल, चन्द्रशेखर आजाद अपने वार्ड में टहल रहा है]

चन्द्रशेखर आजाद : अहिंसा ? हिंसा—इतना बड़ा देश—अहिंसा के बल पर आजाद नहीं किया जा सकता मैं बदला लूँगा । निहत्थे नर नारियो पर लाठियो का प्रहार—ओह मैं सहन नहीं कर सकता । मैं नहीं सहन कर सकता । मैं बार बार अपने मन को एकाग्र करता हूँ किन्तु न जाने क्यों मेरा मन अहिंसा के सिद्धान्त के आगे अपनी उमंगों को कुरबान नहीं करना चाहता । किन्तु क्या हिंसा से इतनी शक्तिशाली सरकार को झुकाया जा सकेगा बिना शस्त्र के तोपों और गोलियों वाली सत्ता को होश पर लाया जा सकेगा नहीं नहीं, यह संभव नहीं—यह असंभव है । तब तब फिर—तब तो महात्मा गांधी का अहिंसा ही वाला सिद्धान्त हमारी सफलता का एक मात्र साधन हो सकता है । किन्तु हमारे

भाई मौत के घाट उतारे जायेगे और मैं खड़ा खड़ा कायरो की भाति देखता रहूँगा हमारे नवजवानों के सिर तोड़े जायेगे और हम उसका प्रतिकार भी न ले सकेंगे । हमारे सामने ही हमारी माँ वहिनो की इज्जत लूटी जायगी और हम उस अत्याचारी को रोक भी न सकेंगे । नहीं—नहीं—नहीं—मैं ऐसा न कर सकूँगा । फिर मैं अहिंसा के सिद्धान्त को नहीं मान सकता—नहीं मान सकता ।

[विकलता के साथ टहलता है]

किन्तु सगठन से क्या नहीं हो सकता ? मेरा इस अहिंसात्मक आंदोलन से किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं बिना भय के कभी प्रीति नहीं हुआ करती । इन अंग्रेजों को, इस काली नोकरशाही को समय समय पर सबक सिखाते ही रखना पड़ेगा अत्याचारियों को चुन चुन कर मौत के घाट पहुँचाना ही होगा । ओह, निर्दोष व्यक्ति पर कोड़ों की मार । मैं भूल नहीं सकता । इन १५ कोड़ों के बदले न जाने कितने गोरो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा । पापियों, सावधान, आज

आजाद सचमुच आजाद है । उसके बदन
मे तो अब तुम हाथ भी न लगा सकोगे ।
उसे जीवित पकड़ लेना ब्रिटिस साम्राज्य
की शक्ति के बाहर की बात होगी ।

: अब जान पर खेल कर भारत माता के
बधन खोलने होंगे आजाद । फासी का
तखता अपने लिये अब फूल की शैया
होगी । आजसे मैं गुलाम नहीं हूँ । मैं
आजाद हूँ । मैं आजाद हूँ । मैं
आजाद हूँ ।



प्रथम अंक

नवम दृश्य

[दो नवयुवक बात करते हुये आते हैं]

एक

• मैं कहता हूँ कि इन सब कामों से देश का किसी भी प्रकार का कोई लाभ न होगा । इस प्रकार न जाने कितने देश भक्त जवानों को यह विदेशी हुकूमत फाँसी के तख्ते पर चढ़ा देगा रोशन ।

रोशन

यह अपना अपना दृष्टिकोण है राजेन्द्र । मैं अहिंसात्मक आन्दोलन के विरुद्ध नहीं हूँ किन्तु हमारा आन्दोलन भी कुछ अर्थ रखता है । सम्भव है हमारे आन्दोलन को सफलता न मिले किन्तु हमारी इन अहिंसात्मक कार्यवाइयों से गान्धी जी के आन्दोलन को अवश्य ही प्रगति मिलेगी ।

राजेन्द्र

यह कैसे ? मेरा विचार है कि इन कामों से सरकार को हमें कुचलने का अच्छा खासा अवसर मिल जाता है ।

व्यर्थ ही मे हमारे नवजानो की जाने चली जाती है । एक के स्थान पर चार फांसी पर चढ़ा दिये जाते है ।

रोशन

यहाँ तुम भूल रहे हो राजेन्द्र । हमारे अहिंसात्मक सत्याग्रहियों पर भीषण से भीषण अत्याचार करते यह निर्लज्ज सरकार नहीं लजाती स्त्रियो तथा बच्चों पर भी पजाब तथा अन्य स्थानों पर अमानुषिक अत्याचार के समाचार आये है । सरकार को भयभीत करने के लिए भी तो कुछ हमारे पास होना चाहिए । अत्याचारियों को थोड़ा बदला भी लगे हाथो मिलते चले जाना चाहिए ।

राजेन्द्र

रोशन

मगर निर्दोष व्यक्तियों को—

तुम व्यर्थ की बात कर रहे हो राजेन्द्र । जब हम एक देश व्यापी आन्दोलन चला रहे है । स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सब कुछ स्वाहा कर रहे है तो फिर कौन दोषी और कौन निर्दोष है यह निर्णय करना ही भारी भूल है । यह देश हम सब का है प्रत्येक भारतवासियों पर इसको स्वतन्त्र करने का भार है ।

- राजेन्द्र : इसका अर्थ
- रोशन : इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को आजादी के लिये कुछ न कुछ तो कुरवानी करना पड़ेगी चाहे वह इच्छा से दे या अनिच्छा से । हम किसी अंग्रेज को जब गोली का शिकार बनाते हैं । तो किसी व्यक्तिगत शत्रुता से तो ऐसा नहीं करते फिर उस व्यक्ति की हत्या करने का दोष हमारे ही ऊपर क्यों है ? उसका दोष सब पर है । सारे राष्ट्र पर है ।
- राजेन्द्र तो तुम्हारे कहने का अभिप्राय यह है कि हत्या चाहे जो करे उसका दोष सारे देश पर है ।
- रोशन निश्चय ही हमको देश के लिए फाँसी पर चढ़ने के लिए नवयुवक चाहिए । चाहे वे इच्छा से सामने मैदान में आये चाहे अनिच्छा से :
- राजेन्द्र : किन्तु यह बात तो न्याय सगत नहीं है । रोशन । जो अपनी इच्छा—
- रोशन : आजादी की लड़ाई का किसी व्यक्ति विशेष पर ही उठने का ठेका नहीं है ।

हम सब को कन्धा से कन्धा मिला कर लड़ना चाहिए । जो लोग इस महायज्ञ में योग नहीं देना चाहते हैं । मैं उन्हें स्वार्थी कहता हूँ । वे अपने निजी स्वार्थ के कारण ही ऐसा नहीं करते ।

राजेन्द्र

: अब तुम्हारी बात मेरी समझ में आ चली है रोशन । हमारा काम—

रोशन

: तुम ठीक समझ रहे हो राजेन्द्र हमारा काम उन अत्याचारियों को दण्ड देना है जो हमारे देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने वाले वीर सिपाहियों के कार्य में रोड़ा बन कर आते हैं । हमारा काम उन अकडबाजों को धराशायी कर देना है । जो अहिंसात्मक सिपाहियों पर अपने हाथ तौलना चाहते हैं । हमारा काम उन राजभक्तों को सबक सिखलाना है जो हमारी आजादी की लड़ाई में सहायक न होकर शत्रु के हाथ मजबूत करते हैं । समझ गये न ?

राजेन्द्र

: ठाक । अब मैं तुम्हारे इस आन्दोलन का अर्थ समझ गया । अब मैं तुम्हारे साथ हूँ । मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ रोशन

भइया कि मै तिल तिल कर के कट जाऊँगा किन्तु तुम्हारे तथा तुम्हारी पार्टी के साथ विश्वासघात न करूँगा ।

रोशन

तब ठीक है । आज मै तुम्हे अपने महान नेता से मिला दूँगा । वे ही हमारे इस दल का संचालन करते हैं । जेल से छूट कर उन्होंने अपने इस दल का संगठन किया है । उनकी अपूर्व शक्ति है राजेन्द्र । उनके चेहरे जैसा तेज तो मैने आज तक किसी के चेहरे पर देखा नहीं । निशाना ऐसा अचूक लगाते है कि क्या मजाल कि शिकार बच कर निकल जाय । वे हमारे गुरु है । उन्ही के पास तुमको ले चलूँगा वे आदमी को पहिचानते है ।

राजेन्द्र

: उनका नाम

रोशन

चन्द्रशेखर आजाद । हम लोग उन्हे पंडित के नाम से सम्बोधन करते है ।

राजेन्द्र

उनके कितने साथी है रोशन भइया ?

रोशन

: हमारे दल मे अग्नि—परीक्षित ही व्यक्ति आ सकते है । गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन की भाति प्रत्येक व्यक्ति उसमे सम्मिलित नहीं हो सकता । अपनी जान हथेली पर रख कर ही कोई हमारे आन्दो-

राजेन्द्र
रोशन

लन का सिपाही हो सकता है । हमारे दल के ऐसे वीरो मे हैं श्री रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगत सिंह, श्री राज गुरू, श्री सुखदेव, श्री अशफाकुल्ला, श्री भगवती चरण आदि ।

किन्तु इस दल का कार्यक्रम ?

वह सब तुम्हे दल मे शामिल हो जाने के बाद मालूम हो जायगा । आज हमारे दल की एक आवश्यक बिषय को लेकर बैठक होने वाली है । समय हो चुका है , मुझे अब वहा पहुँच जाना चाहिए ; अच्छा अब चल रहा हूँ ।



प्रथम अंक

दशम दृश्य

[कानपुर के प्रताप प्रेस का एक गुप्त कमरा]

[क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक हो रही है । रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला, सरदार भगत सिंह, रोशनलाल, राजेन्द्र लाहिड़ी राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य लोग]

रामप्रसाद : हमारा कार्यक्रम बिलकुल तैयार है । हम को आशा है कि हमको पूर्ण सफलता मिलेगी । आपलोगो को भिन्न भिन्न समय तथा भिन्न २ गाड़ियो से लखनऊ कलतक पहुँच ही जाना है । किन्तु यह ध्यान रहे कि समय की पाबन्दी ही हमको कामयाबी दिला सकेगी ।

राजगुरु : लेकिन अभी तक सरदार नहीं आए । मुझे तो आशंका होने लगती है । मेरी चिन्ता बढ रही है ।

सुखदेव : सरदार के विषय मे चिन्ता कैसी? कानपुर की पुलिस मे तो इतनी क्षमता नहीं है

कि वह उनका बाल बाँका भी कर सके ।
वे तो अधिकतर पुलिस वालो के साथ
रहते ही है । पुलिस वालो ही से तो
उनका दोस्ताना है । हा हा हा हा ।

भगतसिंह

सूरत बदलने मे तो कमाल हासिल है
सरदार को । उस दिन झाँसी के पुलिस
कप्तान को जो चक्का दिया उसको याद
करके तो मेरी हँसी रोके भी नहीं सकती ।

रामप्रसाद

: ओ हो, अगर ब्रिटिश सरकार की प्यारी
दुलारी नौकरशाही की बुद्धिमता के
नमूने सुनना होतो सुनो मै एकबार अमुक
जगह से अमुक जगह की यात्रा कर रहा
था । सूटेड बूटेड मै फर्स्ट क्लास मे तो
यात्रा कर ही रहा था मेरे पास रिवाल्वरो
से भरा हुआ सूट केस था । भूल से वह
खुला ही रह गया था । जब मैं स्टेशन
पर उतरा तो कुली के सिर पर सूट केस
लदवा दिया । जैसे ही कुली प्लेट फार्म
पर उतरा कि सूट केस उसके सिर पर
से गिर गया और प्लेटफार्म पर सारे
रिवाल्वर फैल गये । मैं जरा घबराया
लेकिन फौरन एक युक्ति सूझ गयी । मेरे
हाथ में एक बेत था । मैने सड़ासड़ कुली

के लगाने शुरू कर दिये । काफी भीड़ एकत्र हो गयी । मैंने कहा सुअर देख कर नहीं चलता । न जाने किस गधे का सूट केस मेरे उपर पटक दिया । मैंने फिर बेत बरसाने शुरू किये । लोगो ने ,जिसमे कुछ पुलिस वाले भी थे, मुझे समझाया तथा कुली को मुआफ कर देने के लिए कहा । मैं गाली देता बड़बड़ाता बाहर हो गया । उस समय पुलिस भीड़ मे सूट केस के स्वामी को खोज निकालने मे रत थी । हा हा हा हा ।

राजगुरु

• हिन्दुस्तानी पुलिस जैसी निकम्मी है शायद ही किसी देश की हो—

[आजाद का प्रवेश]

आजाद

: जरा सी देर हो गयी मुझको । खैर, अब काम की बात हो जाना चाहिए । आप लोग कल शाम तक लखनऊ पहुँच जायेंगे रोशन उद्दौला की कोठी के पास । आशा है आप सब लोग समझ गये होंगे । वहा से हमारे रवाना हो जाने का कार्यक्रम बन जायगा । रामप्रसाद जी आप लोगो का नेतृत्व करेंगे । मैं तो अब आपको उसी कार्य स्थलपर ही मिलूँगा ।

रामप्रसाद

ठीक । आप चिन्ता न करें किन्तु—

आजाद

• किन्तु क्या ?

रामप्रसाद

किन्तु श्री अशफाकुल्ला का कहना है कि—

आजाद

वह सब मे समझ गया । आप और अश-
फाकुल्ला साथ ही साथ रहेंगे । साथ मे
त्रिवेदी जी को भी ले लीजियेगा । समझ
गये आप ?

रामप्रसाद

ठीक । मै सब समझ गया ।

आजाद

• तो फिर मै चल रहा हूँ । अच्छा,
बन्देमातरम् ।



प्रथम अंक

एकादशः दृश्य

[काकोरी का स्टेशन]

[स्टेशन मास्टर और सिगनेल मैन बात कर रहे हैं]

सिगनेलमैन : बीड़ी पिलाई आपका साहब ?

स्टेशन मास्टर : हाँ भाई मैकू, अभी तो गाड़ी आने में देर है । तब तक एक बीड़ी ही पी जाय ।

[मैकू एक बीड़ी निकाल कर देता है]

स्टेशन मास्टर : हम लोगो की ड्यूटी भी क्या है मैकू ? रात में सभी लोग बाल बच्चों के साथ आराम करते हैं और हम लोग—

[एक उबासी लेता है]

सिगनेलमैन : अभी तो बहुत देर है गाड़ी मा बाबू ।

स्टेशन मास्टर : तब कोई गाना ही सुनाओ मैकू ।

मैकू : हम गाना बाना का जानी बाबू? जैसा आवत है कहौ वहै सुनाय देई ।

स्टेशन मास्टर : हाँ हाँ सुनाओ मैकू—होने दो गाना । जरा सुस्ती तो दूर हो ।

[मैकू गाता है]

[गाना]

अरारारा सरारारा आई रेल गाडी

इस रेलगाडी मे लडके बहुत हैं 'कम्पटलाओ बिस्कुट लाओ ।'

अरारारा सरारारा आई रेलगाडी

इस रेलगाडी मे औरतें बहुत हैं 'पाउडर लाओ क्रीम लाओ'

अरारारा सरारारा आई रेलगाडी

इस रेलगाडी मे मुसाफिर बहुत हैं 'पूडी लाओ कचौड़ी लाओ'

अरारारा सरारारा आई रेलगाडी

[गाडी आने की आवाज आती है]

मैकू

उठो सरकार गडीवा आय पहुँची ।

[गाडी आकर रुकती है]

[चारों ओर से कई नौजवान निकल कर पिस्तौल तान देते हैं]

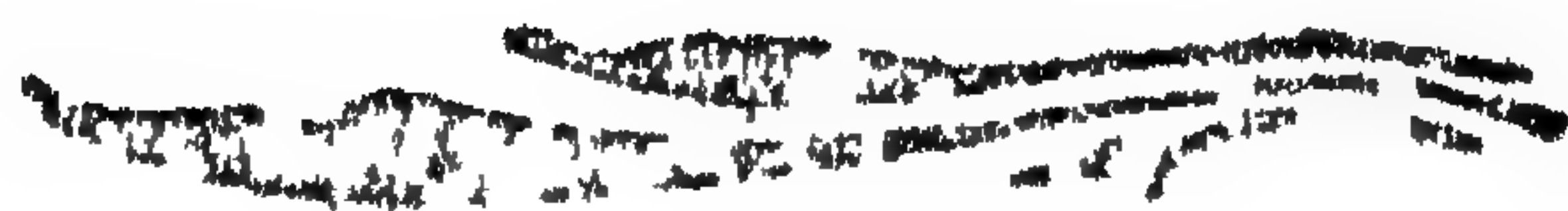
एक नौजवान

खबरदार, अगर मौत के घाट न उतरना
चाहते हो तो वही रहो । खिड़की के बाहर
कोई सग न निकले ।

[गाडी से खजाना निकालते हैं]

[स्टेशन मास्टर और मैकू को बाध कर डाल देते हैं]

[गोरे ड्राइवर को गोली मार देते हैं]



द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[कानपुर मेस्टन रोड का एक मकान । चन्द्रशेखर आजाद कुछ मित्रों के साथ चाय पी रहे हैं]

एक मित्र आज आप कुछ थके से मालूम पड़ रहे हैं पण्डित जी ।

[आजाद एक ठहाका लगाते हैं]

आजाद यह तुमने खूब कही सेठ जी । अरे अपने लोग तो सदा मस्त रहने वाले जीव हैं ।
यहां चिन्ता किस बात की ।

साकी को दिखा देंगे यह हाल फकीराना
टूटी हुई बोतल है फूटा हुआ पैमाना ।

[फिर एक ठहाका लगाते हैं]

सेठ जी • आप मानें या न मानें लेकिन आज कुछ—
[दरवाजा खटकता है]

सेठ जी कौन ?

[उठकर दरवाजा खोलते हैं]

[एक व्यक्ति आता है]

आजाद : कौन, बच्चन ? कहो क्या समाचार ?
हम तो तुम्हारी रास्ता ही देख रहे थे :

बच्चन बुरा समाचार है भइया । काकोरी केस
का फैसला हो गया ।

[आजाद उत्सुकता के साथ बच्चन की ओर देखते हैं]

आजाद फैसला हो गया ? क्या हुआ बच्चन ?
फाँसी ? यही न ?

बच्चन हाँ भइया । विस्मिल, रोशन, राजेन्द्र
तथा अशफाक को फाँसी । ओह मैं तो
फैसला सुनकर जरा नर्वस सा हो गया
हूँ भइया ।

[आजाद ठहाका लगाते हैं]

आजाद . पागल कहीं के ? इसमें नर्वस होने की
क्या बात है । देश-भक्त को ब्रिटिश राज्य
में फाँसी नहीं तो क्या फूलों की शैया
मिलेगी ? हा हा हाहाह ।

बच्चन . मगर अशफादुल्ला को तो—

आजाद : अशफाक वीर है । मैं उसे प्यार करता
हूँ बच्चन ।

[आजाद के नेत्र कुछ सजल हो जाते हैं]

बच्चन : तब आपका भइया प्रोगाम ?
(आजाद को फिर हँसी आ जाती है)

आजाद मेरा प्रोगाम ? खाना और मस्त रहना ।
क्यो भाई साहब ?

सेठ जी अब आपको कुछ विश्राम करना चाहिये ।
(आजाद फिर ठहाका लगाते हैं)

(तभी सेठानी जी का घबड़ाये हुये प्रवेश)

सेठानी जी • गजब हो गया । पुलिस ने मकान घेर
लिया है ।

(सेठ जी तथा बच्चन घबड़ाते हैं किन्तु आजाद हँसते हैं)

आजाद इसमे घबड़ाने की बात नहीं है भाभी ।
वे मेरा कुछ बिगाड नहीं सकते । अच्छा
मैं चला । तुम दो मिनट बाद किवाड़
खोल सकती हो । अच्छा बन्देमातरम् ।

(उठ कर कमरे के बाहर हो जाते हैं)

(पुलिस किवाड़ खटखटाती है)

सेठ जी • क्या चाहते हैं आप लोग ?

पुलिस जल्दी से किवाड़ खोलिए । हम आपके
मकान की तलाशी लेगे । आपके घर में
आजाद छिपा हुआ है ।

सेठ जी : आजाद ? कैसा आजाद ? यहाँ आजाद का क्या काम ?

पुलिस . आप किवाड तो खोलिए । नहीं तो हम को किवाड तोड़ डालने के लिए मजबूर हो जाना पड़ेगा ।

(सेठ जी किवाड खोल देते हैं)

(पुलिस सारे घर की तलाशी लेती है)

इन्सपेक्टर : हमको आजाद के यहा होने की मुकम्मिल खबर मिली है ।

सेठ जी : अगर आपको खबर मिली है तो आप उसे यहाँ ढूँढ निकालिए । सारा घर तो आपके लिये खुला पडा है ।

(पुलिस एक बार फिर तलाशी लेती है)

इन्सपेक्टर माफ कीजियेगा । आपको तकलीफ हुई मुझे खबर तो ऐसी ही मिली थी ।

सेठ जी : आप लोग तो कमाल करते हैं । हम लोगों ने तो आज तक आजाद की शकल भी नहीं देखी । आप लोग उसे ढूँढने हमारे ही यहाँ आ पहुँचे । अच्छा साहब सलाम ।

(पुलिस वाले चले जाते हैं)

सेठ जी : आजाद और बच्चन चले किधर गये
आखिर ?

सेठानी वे तो छत पर चले गये थे ।

(थोड़ी देर में आजाद मुस्कराते हुये आकर खड़े हो जाते हैं)

आजाद . नमस्ते भाई साहब । अगर पुलिस वालों
से छुट्टी मिल गयी हो तो अब कुछ
खाने पीने की बात की जाय ।

सेठ जी हय आप ? आप चले किधर गये थे ।

आजाद चला कहा गया था । सिर्फ पटकापुर तक
घूम कर लौट आया ।



द्वितीय अङ्क

द्वितीय दृश्य

[फासी की कोठरियो मे काकोरी के बन्दी बिस्मिल राजेन्द्र तथा रोशन और अशफाक बन्द है]

बिस्मिल

अशफाक

अशफाक

क्या हो रहा है भाई ?

बिस्मिल

मैं पूछता हूँ कि कर क्या रहे हो ?

अशफाक

• सिवा एक काम के और इस वक्त करने को रह ही क्या गया है । अंग्रेजो के नाम पर फातिहा पढ रहा हूँ बस ।

[बिस्मिल खिलखिलाकर हँसते है]

बिस्मिल

और यह रोशन क्या करता रहता है ?

अशफाक

वह भी अंग्रेजो के नाम पर आँसू बहाया करता है ।

बिस्मिल

: अरे रोशन

रोशन

भाई साहब

बिस्मिल

यह मुहर्रम सा क्या फैलाये रहते हो ।
जिन्दगी की इन गिनी चुनी चार घड़ियों

मे तो हमको जी भर कर हँसना चाहिए
क्यो राजेन्द्र ?

राजेन्द्र इस मस्ती के आलम मे भी कभी कभी
अपने साथियो की याद आ जाती है
बिस्मिल भइया ।

बिस्मिल हम अपना काम कर चुके राजेन्द्र । भारत
माता की बलिवेदी पर केवल शीश ही
चढाना शेष रह गया है। अब वह मुबारक
दिन भी आजकल मे आने ही वाला
होगा । क्यो अशफाक ?

[पुलिस आकर अशफाक की कोठरी खोलती है]

पुलिस कप्तान : अशफाक साहब, आपका ट्रान्सफर
फैजाबाद जेल को हो गया है । आपको
अभी जाना पडेगा ।

अशफाक जहाँ ले जाइयेगा वही चलूँगा ।

[बिस्मिल की कोठरी के सामने जाकर खडा होता है]

अशफाक बिदा, साथियो, मै फैजाबाद जा रहा हूँ ।
अफसोस, इस हुकूमत में हमको साथ
साथ मरने की भी आजादी नही है ।
अच्छा दोस्तो आखिरी सलाम ।
बन्देमातरम् ।

सब बन्देमातरम्

[अशफाक को ले जाते हैं]

बिस्मिल

चला गया । भारतमाता का एक लाडला सपूत देश के प्रति ऋण की अन्तिम पाई चुकाने के लिये हमसे बिछुड़ कर सदा के लिये चला गया । ओह 'यारा अशफाक' .

[अपने आँस पोछता है]

रोशन

. राम भाई, मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है है कि हम लोग कुछ अधिक न कर सके । अपनी गलतियों से जल्द ही पकड़ गये । मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि देश की आजादी की लड़ाई के लिये गान्धी जी का ही रास्ता सही है ।

बिस्मिल

: तुम किसी हद तक ठीक कह रहे हो रोशन मगर तुम्हें न भूल जाना चाहिये कि गान्धी जी का अहिंसात्मक आन्दोलन एक ही बार में सफल न हो जायगा । दमन की आधिया बार बार गान्धी जी के आन्दोलन को निगल जायगी किन्तु ससार में कोई शक्ति उस चिनगारी को न बुझा सकेगी जो समय पर धधक कर उग्र रूप धारण कर लेगी । उस समय वही आधिया अग्नि को और अधिक सहायक होगी ।

- रोशन यह तो तुमने गान्धी जी के आन्दोलन की बात कही है । हमारे आन्दोलन—
- बिस्मिल • हमारा आन्दोलन उस चिनगारी को कभी न बुझने देगा । सदा उसे प्रज्ज्वलित ही करता रहेगा ।
- रोशन किन्तु इस समय तो देश में गान्धी जी का आन्दोलन भी शिथिल पड गया है और हम लोग जेल में हैं । अब क्या होगा रामू भइया ?
- बिस्मिल : इसका निर्णय हमारी पार्टी करेगी ।
- रोशन : लेकिन हमारी पार्टी तो छिन्न भिन्न हो गयी है इस समय । अब क्या होगा ?
- बिस्मिल : चन्द्रशेखर आजाद के जीवित रहते हमको किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं है रोशन । फिर हमने तो अपने कर्त्तव्य को पूरा कर दिया है । हमारी फासी भी देश में एक लहर लायेगी । देश की जनता इतनी जल्दी हमको भूल थोडा ही जायगी । अब सबेरा होने में थोडी ही देर रह गयी है , रोशन । सम्भव है कि यह रात हमारे जीवनकी आखिरी रात हो ।

रोशन : तो क्या आज ही सबेरे हम लोगों को फाँसी के तख्ते को चूमना पड़ेगा ?

बिस्मिल . अब हमारा सफर नजदीक ही मालूम पड़ रहा है रोशन । हमारी तमन्नायें पूरी हो गई हैं । सिर्फ एक हसरत—एक हसरत बाकी रह गई है और वह है माँ के चरणों में अपना शीश चढ़ाना । शायद वह पुण्य घड़ी आज ही हो ।

[सुपरि० जेल, जमादारो तथा पुलिस का प्रवेश]

जेलर . अभागे कैदियों, आज तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी दिन है । फाँसी के तख्ते के लिए तैयार हो जाओ ।

सब का एक साथ . बन्देमातरम् ।

बिस्मिल : हम अभागे नहीं इस देश में सबसे अधिक भाग्यवान व्यक्ति हैं जेलर साहब । भारतमाता के चरणों में अपने तुच्छ शीशों की भेंट चढ़ाकर हम अपने जन्म को सार्थक करेंगे । आज हमारी जिन्दगी का आखिरी दिन नहीं हमारे जीवन की अमरता का पहला दिन है ।

[तीनों कोठरियों से बाहर निकाले जाते हैं । जमादार उन्हें बाधना चाहता है]

बिस्मिल : हमको बाँधने की जरूरत नहीं है जमा-
दार। हम फांसी के तख्ते से भयभीत नहीं
है। तुम लोग देखोगे कि हम लोग उस
फांसी के तख्ते को प्रेम के साथ चूमने के
लिए कितने लालायित हैं। चलो हम
चल रहे हैं।

[पुलिस कैदियों को ले चलने के लिये उद्यत होती है]

बिस्मिल : चलो साथियो, आज प्रसन्नता से हमारे
हृदय कितने गद्गद् है। भगवान से
प्रार्थना है कि हमारा यह बलिदान ऐसा
रङ्ग लाए, हमारे देशवासियों के दिलों में
देश-भक्ति की ऐसी अग्नि प्रज्ज्वलित करे
जिसमें यह अंग्रेजी हुकूमत ही क्या सारा
साम्राज्यवाद जल कर भस्म हो जाये।
और हम—

दूरी दीवार पैं दसरत से नजर करते हैं
पास जो कुछ है वह माता की नजर करते हैं
खुश रहो अहलो वतन हम तो सफर करते हैं

[सब चले जाते हैं]

[सीन का ट्रांसफर होना]

[फांसी का दृश्य]

[पुलिस तीनों कैदियों को लेकर आती है]

पुलिस कप्तान . कोई आखिरी ख्वाहिश ?

[बिस्मिल ठहाका लगा कर गम्भीर हो जाता है]

बिस्मिल . अब न पहिलो बलबलो हैं और न अरमानो की भीड़
एक मर मिटने की हसरत इस दिलो बिस्मिल में है

पुलिस कप्तान . फिर भी

बिस्मिल . कुछ नहीं, कोई ख्वाहिश नहीं, जो कुछ
न पाना था वह पा गया । अब कौन सी
ख्वाहिश बाकी रह सकती है हा फिर
भी एक ख्वाहिश—एक तमन्ना—

पुलिस कप्तान : हां हां कहो

बिस्मिल : एक बार माता के चरणो मे शीश की
भेट चढाने मे न जाने क्यो जी नहीं भर
रहा है मित्रो । यही ख्वाहिश है कि इस
देश मे बार बार जन्म लूं और बार बार
भारतमाता के चरणो पर मुझे शीश
चढाने का अवसर मिले ।

बलिदान हों माता पै चढ़ें शीश बार बार
तन तार सार हो पै बदलो नहीं विचार
यदि जन्म हो मेरा तो इसी देश ही में हो
यदि मृत्यु हो कभी तो इसी देश ही में हो

(पुलिस फासी के तख्ते की ओर ले जाना चाहती है)

विस्मिल : आप तकलीफ न करें श्री मान् । फासी
के पुनीत तख्ते पर मुझे अपने आप ही
जाने दे, उस पवित्र फदे को मुझे अपने हाथ
ही से गले में डालने दे। अच्छा देशवासियो
सबको मेरा आखिरी प्रणाम । बन्देमातरम्

(फन्दा गले में डाल लेता है । साथ ही रोशन और राजेन्द्र भी
अपने गलो में फन्दा डालते हैं)

सब : बन्देमातरम्
(झूल जाते हैं)



द्वितीय अंक

तृतीय दृश्य

(सुपरि० पुलिस का बगला । साहब आराम कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं)

पुलिस कप्तान . ओह इस आजाद ने भी क्या गजब का हज़्ज़ामा मचा रक्खा है । कम्बख्त हाथ ही नहीं आता । इस वक्त सायमन कमीशन की एक परेशानी मौजूद ही थी । साथ ही यह बदमाश कहीं कुछ गड़बड़ न मचा दे । ओफ् ।

(एक खुफिया का सिपाही आता है)

पुलिस कप्तान . क्या खबर है ?

खुफिया . बहुत बढ़िया खबर है हूज़ूर । एक जगह आजाद का पता चला है । आप जल्दी ही करें ।

पुलिस कप्तान . ओह ऐसी बात है ? चलो—जाओ ड्राइवर से मोटर लाने को कहो ।

(खुफिया चला जाता है)

पुलिस कप्तान : अगर यह कम्बख्त आजाद पकड जाय तो एक बड़ी भारी मुश्किल आसान हो जाय । अगर आज मिल गया तो फिर क्या कहना—परेशानी भी दूर होगी और इनाम भी हाथ लगेगा । मगर वह यहा---

(ड्राइवर मोटर लेकर आता है साथ मे वही खुफिया का आदमी)

पुलिस कप्तान : किधर चलना होगा ।

खुफिया : हुजूर चलो मे रास्ता बतलाता हूँ । आज वह भाग न सकेगा । हुजूर इतमीनान रखे ।

पुलिस कप्तान : क्या मोटर पर वहा जाया जा सकेगा ।

खुफिया : मोटर थोड़ी ही दूर तक जा सकेगी फिर तो हमको पैदल ही चलना पड़ेगा ।

पुलिस कप्तान : अच्छा चलो ।

(ड्राइवर मोटर पर दोनों को लेकर जाता है)

(सरदार भगत सिंह का प्रवेश । हाथ मे रिवाल्वर लिये हुये)

भगतसिंह : बहुत छिप कर आना पड़ा है । मगर न जाने क्यों आज आजाद ने इसी बगले पर मुझे मिलने का वक्त दिया था । यह तो पुलिस कप्तान का बगला मालूम पडता

है । यहा तो—कोई आ रहा है—बगल मे छिप कर देखूँ—

(ड्राइवर मोटर लेकर लौटता है । भगतसिंह छिपता है)

ड्राइवर : ओफ्, आज तो मालूम पड़ता है हमारे साहब आजाद को जरूर ही पकड़ लेगे । हा हा हा हा । आजाद को पकड़ लेना खाला जी का घर है न ?

(भगतसिंह बाहर निकल कर आता है)

ड्राइवर : कौन ?

भगतसिंह : हम कप्तान से मिलना चाहते है ।

ड्राइवर : कप्तान साहब घर पर नही है । चन्द्र शेखर आजाद को पकड़ने गए है । आप— आप—

भगतसिंह : मैं बाहर से आया हूँ । कप्तान साहब से एक काम के लिए भेट करना है ।

ड्राइवर : तुम झूठ बोलते हो ।

(एकाएक पिस्तौल निकाल कर भगतसिंह पर तान देता है)

ड्राइवर : हाथ ऊपर करो । मैं तुम्हें पहिचानता हूँ । तुम सरदार भगतसिंह हो । आजाद के साथी ।

(भगतसिंह हाथ ऊपर उठाता है)

डाइवर सरदार भगतसिंह, शायद तुम यहां आजाद
से ही मिलने आये थे । यही न ?
(भगतसिंह जोर से हस पड़ता है)

भगतसिंह . आप आजाद—
(भगतसिंह के गाल पर धीरे से चपत लगाता है)

आजाद : चुप बदमाश ।

भगतसिंह : कमाल है उस्ताद आपको । आज तो मैं
आपको बिलकुल ही पहिचान न सका ।

आजाद : साहब आजाद को पकड़ने गये है । आओ
अन्दर चल कर हम लोग चाय पिये ।
साहब की मेहमानी कबूल करे । हा हा
हा हा



द्वितीय अङ्क

चतुर्थ दृश्य

[एक मकान में क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठक ।

राजगुरु : सुखदेव : बैशम्पाइन . बटुकेश्वर तथा अन्य]

राजगुरु . यह सब जान बूझ कर किया गया है सुखदेव । यह हमको चुनौती दी गयी है ।

सुखदेव लाला लाजपतराय पर लाठियों का प्रहार करके नौकरशाही ने सारे देश का अपमान किया है । लाला जी की मृत्यु एक साधारण घटना नहीं है । हमको इस विषय में बड़े ही गभीर रूप से विचार करना है । इस अपमान का बदला लेना है ।

बटुकेश्वर दत्त : मेरे विचार से तो पंजाब के गवर्नर को ही इस दुनिया से उठा देना चाहिए । तभी थोड़ा सा बदला चुकाया जा सकेगा ।

राजगुरु बिना आजाद की सलाह के हम एक कदम भी नहीं उठा सकते हमको उनके आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए ।

सुखदेव : काकोरी केस के सम्बन्ध में विस्मिल,
राजेन्द्र आदि को फांसी पर लटका कर
सरकार समझने लगी है कि उसने हमारी
पार्टी का अस्तित्व ही मिटा दिया है।
हमको यह सिद्ध करना पड़ेगा कि उन्हें
सीधा मार्ग दिखलाने के लिए अभी
हमारी पार्टी व्यापक रूप से मौजूद है।

बटुकेश्वर दत्त : हमारी पार्टी को अब एक ठोस कदम
उठाना है। इस नौकरशाही को सबक
सिखलाना है।

राजगुरु निश्चय ही। मगर आजाद को काफी
देर हो गयी है

[आजाद और भगतसिंह का प्रवेश]

आजाद बन्देमातरम् ! कामरेड्स मुझे आज जरा
विलंब हो गया।

[बैठ जाता है]

राजगुरु आज हमको एक कार्य-क्रम निश्चित
करना है।

आजाद : हमारा पहिला कार्य क्रम क्या है जानते
हो ?

राजगुरु : हम लोग यही तो जानना चाहते हैं।

आजाद : लाला लाजपतराय के हत्यारे को समाप्त करना ।

सब एक साथ . ठीक । बिल्कुल ठीक ।

आजाद हमारी पार्टी का काम कुछ ढीला पड़ गया है । हमको फिर एक बार जनता के सामने आना है । उसकी सहानुभूति को अपनाना है

सब ठीक । बिल्कुल ठीक ।

आजाद अब हम चुप नहीं बैठ सकते । हमको एक बार फिर जनता में हलचल मचाना है । ब्रिटिश सरकार के कान खड़े करना है । अफसोस अगर काकोरी केस के कारण हमारा काम ढीला न पड़ जाता तो आज नौकरशाही को इस प्रकार लालाजी पर हाथ छोड़ने का साहस न होता । तब फिर लालाजी के हत्यारे को ठिकाने लगाने का भार कौन अपने ऊपर ले सकता है

भगतसिंह . हम

राजगुरु हम

सुखदेव : हम

आजाद : शाबास । लेकिन यह कार्य बड़ी चतुरता से करना है । निशाना ठीक लगाना है ।

मैं स्वयं इस कार्य को हाथ में लूँगा ।
तुम सब लोग मेरे साथ रहोगे । मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि कल गाम से पहिले ही
लाला जी का हत्यारा इस ससार से बिदा
हो जायगा ।

सभी
आजाद

बन्देमातरम्
: लेकिन एक बात है मेरे दोस्तो । अभी
हमको इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य
करना है । एक बार हम ऐसा तहलका
मचायेगे कि नौकरशाही थर्रा जायगी ।
हम जान हथेली पर लेकर आगे बढ़ेंगे ।
लेकिन याद रहे कि हमको अपना प्रोग्राम
पूरा करने के लिए अपने को बहुत बचा
कर रखना है ।

भगतसिंह

ठीक है कामरेड । लेकिन हमारे लिए
यह आवश्यक है कि हम कुछ प्रदर्शन भी
करें और

आजाद

ठीक है मेरे साथी । हम उस पर भी
विचार करेंगे लेकिन शीघ्र ही गान्धी जी
का आन्दोलन फिर प्रारम्भ होने वाला
है । हमको उस आन्दोलन की सहायता
के लिए नौकरशाही को इसलिए भयभीत
रखना पड़ेगा जिससे वह जनता तथा
स्वयं सेवकों पर अधिक अत्याचार करने
का साहस न कर सके । समझ गए न ?

राजगुरु

किन्तु हमारा काम ?

आजाद

तुम ठीक कह रहे हो मेरे दोस्त । हम अपने आन्दोलन से दुबारा इस देश से अंग्रेजों को निकाल नहीं सकते । सफल तो गांधी जी का ही आंदोलन होगा । किंतु निस्सहाय, निशस्त्र तथा अहिंसा-त्मक नेताओं पर हम अपने आंदोलन के द्वारा अधिक अत्याचार न होने देंगे ।

भगतसिंह

• फिर हमारा अस्तित्व ही क्या होगा?

आजाद

: तुम भूल रहे हो भगतसिंह । हमारा बलिदान व्यर्थ न जायगा । जब आजादी का इतिहास लिखा जायगा तब सबसे पहिले स्वर्णक्षिरो मे तुम्ही लोगो का नाम लिखा जायगा वीरो । हमारा मार्ग कुछ भी हो किन्तु

[एक आदमी दौड़ता हुआ आता है]

आदमी

: कामरेड, कामरेड जल्दी करो । पुलिस ने मकान घेर लिया है ।

(आजाद हँसते हैं)

(सभी लोग एक पीछे के रास्ते से निकल भागते हैं)

(पुलिस आकर खड़ी रह जाती है)

पुलिस कप्तान

ओह कम्बख्त आजाद फिर आज हाथसे आकर निकल गया । अफसोस ।

भक्त को भी खुश रखता हूँ और भगवान को भी । अंग्रेज को भी खुश रखता हूँ और देश के नेताओं को भी । चन्दे की मार ऐसी निराली मार है जिसका मन्त्र अगर किसी ने समझा है तो सिर्फ़ सेठ मगरदास ही ने ।

(नौकर का प्रवेश)

रामू

सरकार सरकार कुछ कांग्रेसी आपसे मिलने आये हैं ।

मगरदास

कांग्रेसी—अरररर ठहर जा रामू । मेरी सुराज वाली टोपी तो ले आ—अरे जल्दी जा.....

(रामू चला जाता है)

मगरदास

हाय हाय, ये कांग्रेसी क्यों आये हैं ? सेठ मगरदास से कुछ चन्दा ही माँगने आए होंगे । सिवा चन्दा मागने के इनके पास और धन्धा ही क्या है ?

(रामू गांधी टोपी लेकर आता है)

मगरदास

(टोपी पहन कर) जा जा, अब उन्हें जल्दी बुलाकर ला ।

(रामू चला जाता है)

मगरदास . वाह रे देश-भक्त सेठ मगरदास । अभी देखो इन देश--भक्त नेताओं को थैली के बल पर कैसे बिल्ली बनाता हूँ ।

(रामू के साथ दो कांग्रेस मैनों का प्रवेश)

मगरदास आइए, पधारिए, जय गाँधी जी की । जय सुराज भगवान की—बन्देमातरम् ।

काँग्रेसी . बन्देमातरम्, सेठ जी । कहिए आप का स्वास्थ्य तो ठीक है ?

मगरदास : अजी साहब, इन अंग्रेजों की हुकूमत में रह कर भला किस हिन्दुस्तानी का स्वास्थ्य ठीक रह सकता है ! कहिए साहब, ये सुराज अब आप लोग कब तक ला रहे हैं ?

काँग्रेसी . ये सुराज तो अब आप ही लाये गे सेठ जी ।
मगरदास . सो आप लोग घबराइए नहीं नेता जी । हम लोग सुराज-लाकर ही रहे गे । देखिए अब मैं गाँधी टोपी भी पहिनने लगा हूँ । सुराज को तो अब आना ही पड़ेगा ।

काँग्रेसी : अरे आप तो पुराने देश—भक्त है सेठ जी । अच्छा तो इस समय— —

मगरदास कुछ चन्दा-वन्दा चाहिए क्या ?

काँग्रेसी
मगरदास

. हाँ, इधर कुछ
कोई बात नहीं, कोई बात नहीं । मगर
दास तो आपका सेवक ही है, लेकिन
जरा—

काँग्रेसी

ये जरा क्या ?

मगरदास

मैं जरा विज्ञापन से डरता हूँ । मैं जो
कुछ भी हूँ उसे आप गुप्त दान ही समझे

काँग्रेसी

और रसीद ?

मगरदास

: अजी कैसी रसीद ? इसे आप अपना ही
रुपया समझकर शौक से खर्च करें । मेरा
तो कही नाम भी न लीजियेगा । लीजिये।

(एक थैली देता है)

काँग्रेसी

वाह सेठ जी । आप ही तो सच्चे देश
भक्त हैं । । अच्छा तो फिर बन्दे ।

मगरदास

बन्दे, बन्दे, बन्देमातरम् ।

(काँग्रेसी चले जाते हैं)

मगरदास

घत्तेरे की । हत्तेरी टोपी की (टोपी
एक तरफ फेंक देता है) चले आये जैसे
इन्हीके मामा का घर हो । सच पूछो तो
इन नेताओं से मुझे सख्त नफरत है । जब
देखो तब लाओ चन्दा-लाओ चन्दा । अरी

ओ शारदा की मां—अरी ओ शारदा की
महतारी!

(मगरदास की पत्नी का प्रवेश)

शारदा की मां : क्यों गला फाड़ रहे हो ?

मगरदास : अरे, बनठन कर चलीं कहां *ये साड़ी—
ये झण्डा—

शारदा की मां : मैं जरा आज सुराज वाली मीटिङ्ग में जा
रही हूँ ।

मगरदास : अररर, ये तुम क्या करने लगीं ? अगर
कहीं कलक्टर साहब ने सुन लिया तो—

शारदा की मां : तो क्या हो जायगा ।

मगरदास : अरी गजब हो जायगा ।

शारदा की मां : क्यों गजब हो जायगा ? जब आप कांग्रेस
की जय बोलते हैं, चन्दा देते हैं, अंग्रेजों
को कोसते हैं—

मगरदास : अररर—चुप भी रह । अगर कहीं साहब
ने सुन लिया तो---

[रामू का प्रवेश]

रामू : सरकार, सरकार ।

मगरदास : क्या है रामू ?

रामू : सरकार, बड़े साहब आए हैं ।

मगरदास

• बड़े साहब ?-----क्या सुपडैण्ट साहब ?
-----क्या कलेक्टर साहब—अरे बाप रे—
अरे जरा ठहर रामू—शारदा की मा
जल्दी भीतर जाओ—अरे जाओ—ये साड़ी
ये झण्डा—हाय हाय, जल्दी जाओ मेरी
माँ—

शारदा की माँ

मगरदास

• क्या कोई बाघ आ गया है ?
अरे वो बाघ से भी ज्यादा है शारदा की
माँ । अगर कहीं उसने इस झंडे को देख
लिया तो वह सचमुच बाघ बन कर सेठ
मगरदास को एक ही कौल में डकार
जायगा । जा—मेरी माँ—

[शारदा की मा चली जाती है]

मगरदास

रामू, अब जा साहब को ले आ ।

[रामू जाने लगता है]

मगरदास

: अबे ठहर जा रामू । इस हरामजादी
टोपी को तो हटा । जा जल्दी से मेरी
सरकार वाली टोपी तो ले आ—

[रामू जाता है]

मगरदास

हे प्रभू दीनानाथ , दु ख भंजन मेरी लाज
रखना ।

[रामू हैट लेकर आता है]

मगरदास

. (हैट पहिन कर) ओफ, अब कही जान मे जान आई। मेरा मुँह क्या देख रहा है रामू ? जल्दी से साहब को ले आ।

[रामू जाता है]

मगरदास

: हे हनूमान स्वामी, रावण के इन बशधरो से मेरी रक्षा करना।

[रामू के साथ साहब का प्रवेश]

मगरदास

: आइए प्रभो, पधारिए प्रभो। आप 'वेल' तो हैं न ? आपकी हेल्थ गुड तो है न ?

साहब

. वेल सेठ मगरदास, हम तुमसे बहुत खुश है।

मगरदास

: (प्रसन्नता से उछलकर) ओह आप खुश है ? आप सचमुच खुश है—अब जान मे जान आई। अगर आप खुश है दीनानाथ तो अब भगवान को भी खुश करने की कोई जरूरत नहीं रह गई। तो फिर आप खुश हैं—एक बार फिर प्रेम से कह दीजिए जगन्नाथ कि आप खुश है ?

साहब

: हाँ हा, हम तुमसे बहुत खुश है।

मगरदास

साहब खुश है। अब फिर हमारे लिये क्या आज्ञा होती है विश्वनाथ !

साहब : हम तुमको राय बहादुर बनाना मांगता है ।

मगरदास : राय बहादुर, सेठ मगरदास को राय बहादुर—

[प्रसन्नता से नाचने लगता है]

साहब : हाँ हाँ, तुमको राय बहादुर बनाना मांगता है ।

मगरदास : तो फिर प्रभो अब बना ही दीजिए राय बहादुर । आई एम योर मोस्ट ओबी-डियेंट सर्वेण्ट स्टैंडिंग आन वन लेग प्रे इङ्ग फार योर हेल्थ वेल्थ एण्ड प्रास्पेरिटी ।

[एक टांग पर खड़ा होता है]

साहब : ये तुम क्या करने लगा मगरदास ?

मगरदास : सरकार का शुक्रिया अदा कर रहा था ।

साहब : ठीक, बहुत ठीक । अच्छा अब हमको—

मगरदास : कुछ चल्दा चाहिए जगन्नाथ ?

साहब : ठीक, तुम बहुत समझदार आदमी है मगरदास ।

मगरदास : ठीक है विश्वनाथ ! हम तीन पीढ़ी से ऐसे ही समझदार होते आ रहे हैं ।

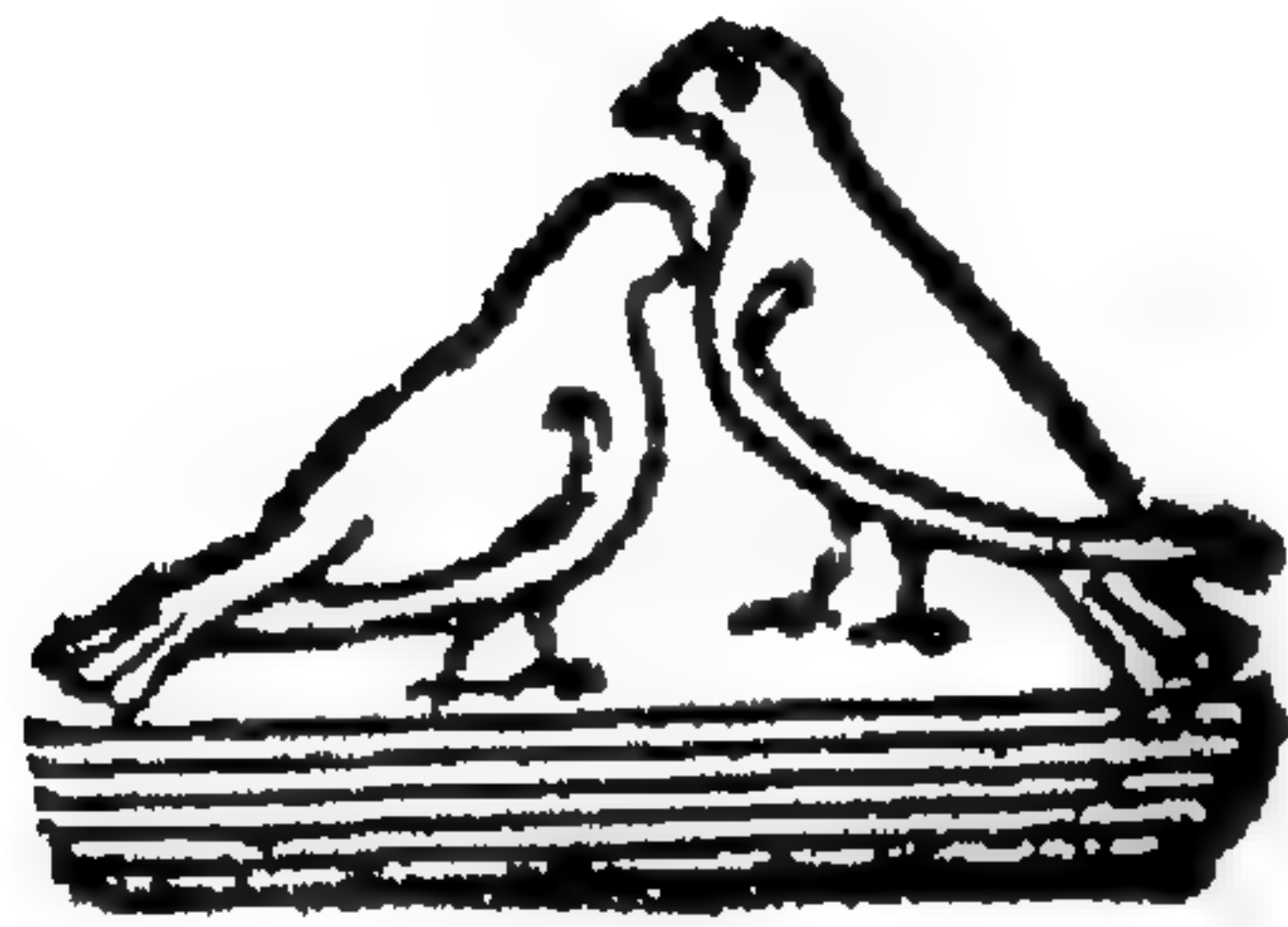
साहब : पाच हजार चाहिए ।

मगरदास : कुल पाँच हजार । अभी लीजिए प्रभो ।
[लाकर थैली देता है]

साहब गुड सेठ जी । अब तुम शक्तिया रायबहादुर
हो गया । थैंक यू ।

[चला जाता है ।

मगरदास राय बहादुर । अरी ओ शारदा की मा—
दौडो दौडो-सेठ मगरदास रायबहादुर
हो गया ।



द्वितीय अंक

षष्ठम् दृश्य

(पुलिस सुपरि० के बगले के बाहर का दृश्य)
(आजाद, भगतसिंह, राजगुरु छिप कर आते हैं)

आजाद इस अंग्रेज को तुम्हारी ही गोली से
 मरना है भगतसिंह। तुम्हारा पीछा करने
 वाला मेरा शिकार होगा । यदि
 वह एक गोली से जीवित रहा तो
 दूसरी गोली राजगुरुकी चलेगी। समझ गये?

भगतसिंह मगर आप?

आजाद अब ज्यादा बात करने का समय नहीं है ।
 जाओ अपने स्थान पर पहुँच जाओ ।

(सब यथास्थान छिप जाते हैं)
(साउ डर्स मोटर साइकिल पर निकलता है)
(भगतसिंह गोली मारता है)

भगतसिंह : डेविल, ले मर

(पीछे से आजाद आकर उसके एक गोली मारते हैं)

आजाद : फिनिश, भागो भगतसिंह

(दोनों भागते हैं । पीछे से एक सिपाही बन्दूक लेकर पीछा करता है)

सिपाही खबरदार

राजगुरु उसके गोली मारते हैं । गोली उसके पैर में लगती है वह गिर पड़ता है)

(आजाद, भगतसिंह, राजगुरु भाग जाते हैं)
(बहुत से सिपाही आ जाते हैं)

सिपाही पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो

(पीछे से फलाट का फटना)

(भगतसिंह, आजाद, तथा राजगुरु का साइकिलों पर भागते दिखाई पड़ना ।)



तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

(सभा हो रही है । भीड़ भाड़ । एक नेता भाषण दे रहे हैं)

नेता जी अब इस नौकर शाही का जुल्म सीमा से बाहर होता जा रहा है । हमको कुचला जा रहा है । हमारे नेताओं को जेल में ठूस दिया गया है । हमारी जुबानों पर ताले डाल दिये गए हैं । इस पर हमारे ऊपर एक और नया कानून लागू किया जा रहा है । आप जानते हैं यह कानून क्या है ? इस कानून का नाम है 'पब्लिक सेफ्टी बिल' । पब्लिक को कुचल देने वाले कानून का नाम है पब्लिक सेफ्टी बिल अर्थात् पब्लिक की रक्षा करने वाला कानून । समझा आपने ? दिल्ली की धारा सभा में आज कल यह बिल पेश है । इस बिल की मन्शा हमारी जुबानों पर ताला लगा देना है । रौलट कानून का यह दूसरा रूप है । हम इसका विरोध करेंगे । हमारे पूज्य नेता पं०

मोतीलाल नेहरू, पं० मदनमोहन मालवीय जो इस समय दिल्ली की धारा सभा के सदस्य हैं। इस बिल का विरोध कर रहे हैं, किन्तु उनके विरोध का कोई मूल्य अंग्रेजों की दृष्टि में नहीं है। इस अत्याचार की कहीं सीमा है? इस दमन और ज्यादाती का कोई उत्तर है हमारे लिए? नहीं नहीं, परन्तु क्या हम आंख बंद करके इन अत्याचारों को सहन करते जायेंगे। नहीं :

- एक आवाज : हम विद्रोह करेंगे
 दूसरी आवाज : हम सत्याग्रह करेंगे
 तीसरी आवाज : हम आन्दोलन उठावेंगे।
 नेता : ठीक है। हमको अत्याचार का प्रतिकार करना चाहिए। हमको आगे बढ़ कर लोहा लेना चाहिए। किन्तु क्या आप में शक्ति है? क्या आप में संगठन है? क्या आप त्याग के लिये तैयार हैं? हमारे लिए सायमन कमीशन भेजा गया। हमने उसे ठुकरा दिया, किन्तु फिर भी एक मनमाना विधान हम पर लादने की तैयारी की जा रही है। हमारी विधान सभायें, हमारी कौंसिलें खिलौना हैं। वे हमको फुसलाने के लिए बनाई गई

है। ऐसी विधान सभाओं को लात मार देना चाहिए। हमको कौंसिल का बहिष्कार करना चाहिए। हमारी आजादी की लड़ाई फिर शुरू होने वाली है आपको उसके लिए अपने को तैयार करना है। आपको—

(सहसा पुलिस आ जाती है)

पुलिस

सभा बन्द करो। यह गैर कानूनी काम है। सिपाहियों नेताजी को गिरफ्तार करो।

(सिपाही नेता जी को हथकड़ी पहिनाते हैं)

(इनकिलाब जिन्दाबाद। महात्मा गांधी जिन्दाबाद के नारे)



तृतीय अंक

द्वितीय दृश्य

(दिल्ली में धारा सभा की बैठक)

(प० मोतीलाल नेहरू, प० मदनमोहन मालवीय तथा अन्य नेता भाग ले रहे हैं)

प० मोतीलाल : यह बिल नहीं भारतीयों की रही सही आजादी पर कुठारा घात है । पब्लिक सेफ्टी बिल के नाम से जनता का गला घोटने की तैयारी की जा रही है । इस पर जरा इसके नाम पर तो गौर कीजिए : पब्लिक सेफ्टी बिल ।

(बैठ जाते हैं)

(अर्थ मंत्री जार्ज शुस्टर खड़े होते हैं)

जार्ज शुस्टर : सरकार ने जनता की भलाई के लिए ही यह बिल पेश किया है। हमारा मक्सद जनता को उन दगाइयों तथा गुंडों से सुरक्षित करना है जो मुल्क के अमनो आमान को खतरे में डालते रहते हैं---

(आवाजे 'झूठ, गलत, झूठ')

यह गलत नहीं है । मुल्क में डकैती,

चोरियां और कानून को ठुकराने की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। हमारा फर्ज है कि हम इन संगठनों को कुचल दें। इस बिल को पेश करने का यही सरकार का मकसद है।

(बैठ जाते हैं)

(पं० मदनमोहन मालवीय खड़े हो जाते हैं)

मदनमोहन मा० : मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि कानून गुडों, चोरों और डकैतों के लिए नहीं बनाया गया है। इसका उद्देश्य देश भक्तों और सारे देश के उठते हुए नौजवानों को कुचलना है।

(आवाजे 'शर्म' 'शर्म')

मैं कहता हूँ कि यह बिल हमारा गला घोट देने के लिए है। हमारी जुबानों पर ताला लगा देने के लिए है तथा हमारी रही सही आजादी को पैरों तले कुचल डालने के लिये है। मैं इस प्रकार के बिल का घोर विरोध करता हूँ तथा सरकार को विश्वास दिलाता हूँ कि इस प्रकार के बिल से जनता की विरोधी भावनाएँ और भी उत्तेजित होंगी और उनका उत्तरदायित्व सरकार पर ही होगा।

(‘करतल ध्वनि’)

जेम्स करार

आज इस मुल्क में जितनी बदअमनी फैली
हुई है वैसी कभी नहीं थी । अभी थोड़े
दिन हुये काकोरी में ट्रेन लूट ली गई ।
लाहौर में दिन दहाड़े साउ डर्स को कतल
कर दिया गया ।

(सहसा बड़ी आवाज के साथ बम आकर गिरता है)

(हाल में धुआं भर जाता है । भगदड़ मचती है । पुलिस
'पकड़ो पकड़ो' की आवाज लगाने लगी है ।)

(सहसा गैलरी में आवाज आती है । 'लॉग लिव रेवोलूशन'
'इनकिलाब जिन्दाबाद' हमने फेंका है हमने बम फेंका है ।)

(सारे हाल में 'इनकिलाब जिन्दाबाद के नारे')



तृतीय अंक

तृतीय दृश्य

[आनन्द भवन का दृश्य]

[एक कमरे के अन्दर जवाहर लाल नेहरू दो मित्रों के साथ बैठे हैं]

जवाहरलाल नेहरू . सरदार भगतसिंह की फाँसी के लिए जो कुछ करना था वह किया गया किन्तु सरकार टस्स से मस्स नहीं होना चाहती । ऐसा प्रतीत होता है कि यह गोरी हुकूमत इस मुल्क के किसी भी देश भक्त नौजवान को जिन्दा नहीं रहने देना चाहती अफसोस, मैंने और महात्मा जी ने लार्ड इर्विन से मिलकर भगतसिंह की फाँसी के बारे में काफी बातचीत की है लेकिन—लेकिन—

एक मित्र

भगतसिंह जैसे देशभक्त की फाँसी इस देश की महान दुर्घटना होगी ।

जवाहरलाल

. हमारे देश के कुछ नौजवानों की जानें

जिस गलती के साथ चली गई उस बात को जब मैं सोचता हूँ तो दिल को तकलीफ होने लगती है । रोशन, बिस्मिल, राजेन्द्र, लाहिडी, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह—हमारे देश के ये रत्न आजादी की लड़ाई के इतिहास में अमर रहेंगे । हमारा और इन जवानों की लड़ाई का रास्ता भले ही अलग हो, हमारे सिद्धान्तों में जमीन आसमान का फर्क हो लेकिन इसमें शक नहीं कि इन नवजवानों ने अपना जो कुछ देश की लड़ाई में कुरबान किया है उसे हम कभी न भूल सकेंगे । आजादी मिल जाने के बाद जब लोग इन वीरों के बलिदान की सच्ची कहानी सुनेंगे और समझेंगे तो उनका दिल इन नवजवानों के प्रति श्रद्धा से भर भर जायगा । मैं कहता हूँ—

(एक नौकर आता है)

जवाहरलाल : क्या है

नौकर सरकार एक नौजवान आपसे मिलने आया है ।

जवाहरलाल , अच्छा भेज दो ।

(नौकर के साथ चन्द्रशेखर आजाद आते हैं)

जवाहरलाल बैठिए, कहिए ।

आजाद . मैं एकान्त में आपका कुछ समय लेना चाहता हूँ ।

(जवाहरलाल अपने मित्रों की ओर देखते हैं वे लोग चले जाते हैं)

जवाहरलाल . फरमाइये
आजाद मेरा जीवन भर हिंसात्मक कार्यों पर अटल विश्वास रहा है । मैं क्रान्तिकारी हूँ । मैं आपसे प्रश्न करता हूँ कि यदि अब उस हिंसात्मक आन्दोलन की असफलता देख कर मेरा विश्वास उस पर से उठ गया हो तो अब मेरे लिए क्या रास्ता है ।

जवाहरलाल . अगर आपका दिमाग सही रास्ते पर आ गया हो तो आप अब हम लोगों के साथ कन्धे के कन्धा भिड़ा कर काम कर सकने के लिये आमन्त्रित हैं ?

आजाद : लेकिन—

जवाहरलाल . लेकिन क्या, तुम आज ही से—

आजाद : लेकिन पुलिस क्या तब हमको पकड़ न लेगी—

जवाहरलाल . फिजूल की बातों में क्या रक्खा है—आप

मेरे साथ आकर काम कर सकते हैं ।
आजकल के नवयुवक बात ज्यादा करते
हैं काम कम । फिर आप कोई चन्द्रशेखर
आजाद तो हैं नहीं जो पुलिस आपको
ढूढ़ती फिर रही हो ।

आजाद

आप ठीक ही कह रहे हैं पण्डित जी । मैं
चन्द्रशेखर आजाद हूँ ।

जवाहरलाल

आजाद ? तुम—तुम चन्द्रशेखर आजाद हो
चन्द्रशेखर—आजाद—

(सीने से लगाते हैं)

आजाद

अब आप मुझे आज्ञा दे, मैं क्या करूँ ।
मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारा रास्ता
गलत रहा है लेकिन—

[जवाहरलाल परेशानी में सोचते हैं]

आजाद

अगर मैं सार्वजनिक रूप से स्वीकार
कर लूँ कि मेरा विश्वास हिंसा से उठ
गया है तो क्या नौकरशाही मेरे ऊपर
विश्वास करके मुझे क्षमा कर देगी ?
तब—

जवाहरलाल

तब-तब—क्या हो सकता है ? क्या हो
सकता है ?

आजाद

हमारी पार्टी समाप्त हो गयी है । हमारा

सङ्गठन टूट गया है—अब मेरे लिए उपाय—

जवाहरलाल : मेरे नौजवान, मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ—मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ—मैं अशक्त हूँ—मैं कुछ भी तो नहीं कर सकता तुम्हारे लिये आजाद—
जवाहरलाल तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता—

[आजाद पण्डित जी की ओर देखता है]

आजाद : मैं जानता हूँ पण्डित जी कि आपके हृदय में हम लोगो के लिए असीम प्यार है—स्नेह है—मगर मैं आपकी मजबूरियों को जानता हूँ—आप चिन्ता न करें—मैं—

जवाहरलाल अफसोस जवाहरलाल उस नवयुवक के लिए कुछ नहीं कर सकता जिस पर आज देश को नाज है ।

[परेशानी के साथ टहलने लगते हैं]

आजाद मैं जा रहा हूँ पण्डित जी । आज मैंने अनुभव किया कि आप कितने महान व्यक्ति हैं । केवल एक ही प्रार्थना है—देश को तो आजादी मिल कर ही रहेगी आशा

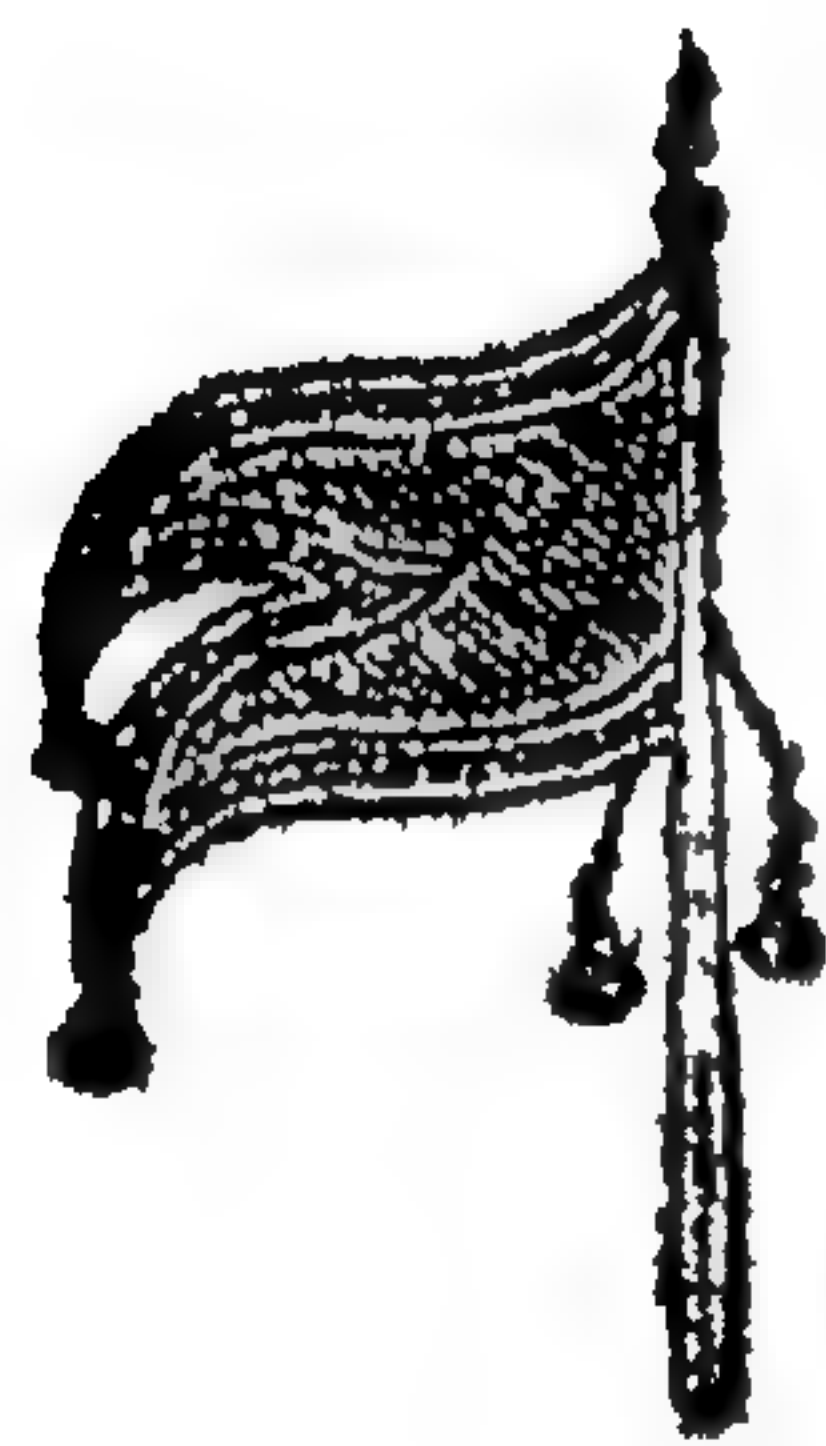
है आप उन दिनों आजाद और उसके
साथियों को न भूलेंगे—अच्छा बिदा ।

[आजाद चला जाता है]

जवाहरलाल

मैं इतना अशक्त—मैं किसी के लिए आज
कुछ नहीं कर सकता—मैं भगतसिंह को
फासी से नहीं बचा सकता—मैं आजाद
को मरने से नहीं बचा सकता—अफसोस

[परेशानी की हालत में बैठे रहते हैं]



तृतीय अंक

चतुर्थ दृश्य

[सेठ मगरदास की बैठक । सेठ जी तिजोरी में रुपया रख रहे हैं]

मगरदास : चार हजार पाच सौ छप्पन बारह आने
—ठीक । दस हजार पाच सौ चालीस ।
यह भी ठीक । बीस हजार पाच सौ
तीन---

[रामू आकर देखता है]

मगरदास तेरह हजार-अबे तू क्या देख रहा है? जा
एक गिलास पानी ले आ ।

[रामू चला जाता है]

मगरदास . ये नौकर चाकर भी अजब नदीदे होते हैं
अगर भूल से भी इनकी नजर लक्ष्मी जी
पर पड़ जाय तो ये हरी-भरी तिजोरी भी
एकदम से साफ हो जाय । आठ हजार
पाच सौ---

[रामू का प्रवेश]

रामू सरकार, सरकार
मगरदास अबे तू फिर आगया ।
रामू सरकार बढे साहब आये है ।
मगरदास . साहब आये है ? साहब आये है? साहब
 आये है तो इस बार मेरे लिए रायबहा-
 दुरी जरूर लेकर आये होंगे । जा रामू
 जल्दी से बुला ला ।

[रामू जाना चाहता है]

मगरदास अरे ठहर जा रामू के बच्चे । अरे वह
 मेरी सरकार वाली टोपी तो ले आ :

[रामू हैट लाकर दे देता है]

मगरदास . मगर आज ये साहब क्यों आये ? कही
 शारदा की मा ने तो कोई गडबड़ी नहीं
 कर दी ?

[साहब का रामू के साथ प्रवेश]

मगरदास आइये दीनानाथ, वेलकम, गुडलक ।
साहब सेठ मगरदास, हमको पता चला है कि
 चन्द्रशेखर आजाद तुम्हारे घर में छिपा
 है । हमारी पुलिस ने उसे तुम्हारे घर में
 आते देखा है ।

मगरदास

ये आप क्या कहने लगे विश्वनाथ ?
चन्द्रशेखर आजाद मेरे घर मे ? मेरे घर
मे चोर, लुटेरो और डाकुओ का क्या
काम जगन्नाथ ? आइ एम योर मोस्ट
ओविडियेट सरवेट स्टैंडिंग आन वन लेग
प्रेइ ग फार हेल्थ वेल्थ एण्ड प्रोस्पेरिटी ।

साहब

. हम तुम्हारे घर की तलाशी लेगा ।

मगरदास

. आज आप कैसी बातें कर रहे हैं दीना-
नाथ ? अगर चन्द्रशेखर आजाद मेरे घर मे
पैर भी रख दे तो मैं उसका अपने ही
हाथों से बध कर दूँगा । क्यों रामू ?

रामू

जी सरकार

साहब

. हम जानता है कि तुम बड़ा ही खैरखाह
आदमी है मगर—

मगरदास

. अब इस अगर—मगर को मगरदास पर
ही छोड़ कर यह बतलाइये कि सरकार
को कितना चन्दा चाहिए

साहब

. तुम बहुत अच्छा आदमी है सेठ मगर
दास : मगर देखो, अगर कभी चन्द्रशेखर
आजाद तुम्हारे घर आ जाय तो उसको
फौरन पकड़ कर पुलिस को इत्तिला देना
होगा ।

मगरदास

अजी साहब, चन्द्रशेखर आजाद की क्या मजाल कि वह सेठ मगरदास के घर में पैर भी रख सके । एक ही चांटे में जहन्नम रसीद कर सकता हूँ सरकार । मैं उसके हाथ पैर तोड़ कर रख दूँगा—उसकी नाक में घूँसा मार दूँगा—उसकी पूछ उखाड़ दूँगा—उसकी
क्यों रामू ?

रामू

: जी सरकार

साहब

: अच्छा हम चलता है । वाई-वाई ।

[साहब जाते हैं]

सेठ मगरदास

धत्तेरे दीनानाथ की । साहब की अकल चरने चली गई है । मेरे घर में चन्द्रशेखर आकर कहीं जिन्दा बच सकता है ? और फिर सुना है कि चन्द्रशेखर आजाद को पकड़वाने वाले को दस हजार रुपया इनाम मिलेगा । क्यों रामू, अगर आजाद कहीं पकड़े मिल जाय तो फिर बस यह दस हजार की रकम भी सेठ मगरदास की समझ लेना ।

रामू

: जी सरकार

मगरदास

: अगर वह कहीं भूल से भी मेरे घर आ

जाय तो फिर बस पौ बारह है । पूरे दस
हजार । भेज, भेज प्रभो इस चन्द्रशेखर
आजाद को मेरे घर भेज

[तिजोरी खोलकर फिर नोट गिनता है । रामू भीरे से पिस्तौल
निकालकर तानता है]

मगरदास आठ हजार पाँच सौ-अरे यह क्या रामू ?
हाय हाय तू यह क्या मजाक कर रहा है ।

रामू : सेठ जी, तिजोरी का यह सारा रूपया
मेरे हवाले कीजिए नहीं तो—

[पिस्तौल सेठ पर तानता है]

मगरदास : अरे आज तुझे क्या हो गया है रामू ?
अरे भाई इसे तो सामने से हटा—क्या
करता है—क्या करता है ?

रामू : जल्दी से तिजोरी का रूपया मेरे हवाले
कीजिए । जिस जनता का रक्त चूस कर
आपने यह धन इकट्ठा किया है अब
उसी जनता के पास यह धन लौट जायगा
चलिए, जल्दी बढ़ाइए ।

मगरदास : अरे सुन तो रामू—अरे रामू

रामू : रामू नहीं चन्द्रशेखर आजाद

[नकली मूछे उतार देता है]

मगरदास . आजाद ! चन्द्रशेखर आजाद ? हाय
हाय-----

[आजाद के पैरो पर लेट जाता है]

मगरदास क्षमा करो प्रभो । आइ एम योर मोस्ट—
आजाद उठिए सेठ जी । जल्दी से रुपया मेरे
हवाले कीजिए ।

मगरदास चन्द्रशेखर आजाद, चन्द्रशेखर आजाद
—देखो भाई रामू—नहीं चन्द्रशेखर
आजाद—देखो भाई कहा सुना सब माफ
करना—

आजाद रुपया निकालो

मगरदास हाय हाय जरा इसे तो दूर कर ले ।
अगर कहीं धोखे से भी छूट गयी तो
शारदा की मा मेरे मरने से पहले ही
विधवा हो जायगी ।

आजाद तुम इसकी चिन्ता न करो । शारदा की
माँ जैसी देश-भक्ता और सती साध्वी
को विधवा न बनाने की वजह से ही तुम्हे
आज छोड़ देता हूँ ।

मगरदास

: अरररर—जरा इसे तो दूर कर ले
भाई—

आजाद

पीछे हटिये सेठ जी—अब वही खड़े
रहिए—अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया
तो.....

मगरदास

[आजाद नोट निकालते हैं]
बन्दे भैया आजाद । आइ एम योर.....

तृतीय अंक

पंचम दृश्य

(फासी की कोठरी)

(सरदार भगतसिंह राजगुरु : सुखदेव)

सरदार भगतसिंह

(गाना)

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है
एक मुद्दत से हैं तेरी कैद में सैयाद हम
और आजादी की खाहिश कैद अपने दिल में है
आज मकतल में वो कातिल कह रहा है बार बार
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है

राजगुरु : यही शहादत की तमन्ना आज जितनी
भड़क रही है वैसी शायद कभी न भड़की
थी। मैं भी गाना चाहता हूँ, लेकिन
अफसोस गाना जानता ही नहीं
(भगतसिंह ठहाका लगाता है)

भगतसिंह मैं तो देश की आजादी नजदीक ही आई
समझ रहा हूँ राजगुरु।

अंग्रेजी सलतनत के पैर लडखडाने
लगे हैं । मगर अफसोस

दुनियां के जो मजे हैं हर्गिज ये कम न होंगे
चलते रहेंगे यों ही अफसोस हम न होंगे

काश मे आजाद हिन्दुस्तान के दर्शन कर
पाता—

राजगुरु

आज तुम कैसी बातें कर रहे हो सरदार
हमारे खून से सींची हुई आजादी, हमारे
प्राणों के बलिदान पर बनी हुई आजादी
—ओह यह याद करके मैं गद्गद् हो जाता
हूँ भगतसिंह । हमको स्वतंत्रता दिवस के
जुलूसों में नहीं, इतिहास में स्थान चाहिए
हम इतिहास बना रहे हैं, हम इतिहास
बनाने जा रहे हैं । मैं देश के लिए जिन्दा
रहने में नहीं देश के लिए मरने में फर्क
समझता हूँ ।

भगतसिंह

साबाश राजगुरु । लेकिन आखिर वह
दिन कब आयेगा जब हम भारत माता
के पुनीत कदमों में अपना सिर चढ़ा रहे
होंगे—मुझसे अब रुका नहीं जाता
राजगुरु—मुझसे अब रुका नहीं जाता—

राजगुरु

हमारी मौत हमारी जिन्दगी से कहीं
ज्यादा शानदार होगी भगतसिंह

(जमादार, पुलिस, जेलर आदि का प्रवेश)

भगतसिंह खुशी, प्रसन्नता, ओह हमारी मुराद पूरी
होने का शायद दिन आ ही गया राज-
गुरु-सुखदेव-मुबारक-मुबारक
जेलर कैदियो तैयार हो जाओ । अब वक्त नहीं
है । आज ही सारा काम पूरा करना होगा
राजगुरु : हम आप से पहले तैयार है जेलर
साहब । चलिए ।

(तीनों चलते हैं । भगतसिंह गुनगुनाता है)

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है
आज मकतल में वो कातिल कह रहा है बार बार
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है

जेलर आप लोग वीर है । अफसोस हम लोग
आप की कुछ सेवा नहीं कर सकते ।

भगतसिंह मायूस न हो मेरे दोस्त । सबसे बड़ी
सेवा तुम्हारी यही है कि तुम हम लोगों
से हमदर्दी रखते हो । तुम बढिया इन्सान
हो ।

जेलर अफसोस, आप लोगों की लाश भी आप-
के रिस्तेदारों को देने की मनाही कर
दी गई है ।

(भगतसिंह ठहाके लगाता है)

भगतसिंह

सरकार का यह ख्याल एक मुबारक ख्याल है । हम तो अपना सब कुछ माता की भेंट चढ़ा चुके जेलर साहब । तन, मन, धन, सभी कुछ ।

हम मुबारक है कि माता की नजर चढ़ते हैं
तुम मुबारक हो जो यह दिन हमें नसीब हुआ
हम में आपस में न कीना है न बदमगजी है
न रकाबत है न हम में कोई रकीब हुआ

राजगुरु

हम तो सरकार के लिए यहाँ कह सकते हैं कि 'हम को दुआये दो तुम्हें कातिल बना दिया ।'

जेलर

अब चलिए देर हो रही है

सुखदेव

: चल रहे हैं जेलर साहब । अब हमारे लिए जल्दी और देर क्या ? इस मस्ती के आलम में जवान से जो कुछ भी निकल जायगा वतन के लिए वही यादगार बन कर रह जायगा ।

भगतसिंह

: हा तो फिर

सुखदेव

: हाँ वही अपना पेटेन्ट राग राजगुरु, वस आखिरी बार

(तीनों गाते हैं)

मेरा रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे बसंती चोला
 नानाराव धुंधपंत ने एक चिनगारी सुलगाई
 भाँसी की रानी ने भी एक लपक ध्वजा फहराई
 बीर तांतिया टोपे चमका नया मोर्चा खोला
 वही रंग के बसन्ती चोला मेरा रंग दे बसन्ती चोला
 इसी रंग में बिस्मिल्ल रोशन ने थे सीस चढ़ाये
 बीर हजारों बलिवेदी पर कफन लपेटे आये
 इसी रंग में भगतसिंह ने बम का फेंका गोला
 मेरा रंग दे बसंती चोला

[चले जाते हैं]

[सीन ट्रान्सफर]

[फासी घर में तीनो गाते हुये पहुँचते हैं]

[गोरा मजिस्ट्रेट आता है]

गोरा मजिस्ट्रेट : गाना बन्द करो

[तीनो बन्देमातरम् का गाना शुरू करना चाहते हैं गोरा
 मजिस्ट्रेट रोकता है]

भगतसिंह

गोरी हुकूमत के काले नुमाइन्दे, तू आज
 हम लोगो की जुबान नहीं बन्द कर
 सकता । मेरी ही क्या वह जमाना नज-
 दीक है जब मुल्क में किसी भी इन्सान के
 मुंह पर तुम ताला न लगा सकोगे । इस
 मुल्क से एक दिन गोरी हुकूमत का
 खात्मा होना ही है । हम एक बार

बन्देमातरम् का गीत गाकर ही तख्ते
पर चढ़ सकते हैं। दुनियां की कोई भी
ताकत आज हमको नहीं रोक सकती।
राजगुरु बन्देमातरम्
गोरा मजिस्ट्रेट नहीं, नहीं, हम गाने की इजाजत नहीं
दे सकता। फांसी—
भगतसिंह मुझे अफसोस है साहब कि अब मैं आप-
का यह हुक्म नहीं मान सकता।

[तीनों बन्देमातरम् गाते हैं]

छीन सकती हैं नहीं सरकार बन्देमातरम्
हम फकीरों के गले का हार बन्देमातरम्
बन्देमातरम्

सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम
शस्य श्यामलाम मातरम्
बन्देमातरम्

शुभ्र ज्योत्स्नाः पुलकित यामनीम्
फुल्ल कुसुमित व्रुमदल शोभनीम्
सुहासनीम् सुमधुर भाषणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्

बन्देमातरम्
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्वित्रिंश कोटि भुजैः धृत करबाले
के बोले मां तुमि अबले

बहुबल धारणीम् नमामि तारणीम्
रिपुदल वारणीम् मातरम्
बन्देमातरम्

भगतसिंह चलो, अब हम मरने को तैयार हैं ।
माता के चरणों पर अपना शीश चढ़ाने
के लिए तैयार हैं । चलिए ।
[तीनों फासी के तख्ते पर चढ़ जाते हैं]

तीनों इ किलाब जिन्दाबाद, बन्देमातरम्,
 [झूल जाते हैं]

जेलर इन कैदियों की लाशें ?

गोरा मजिस्ट्रेट इन बदमाशों की लाशें यही फूँकी जायगी
राख रावी की लहरों में बहा दी जायगी ।
[तीनों लाशें मिट्टी का तेल डाल कर वही फूँक देने का दृश्य]



तृतीय अंक

षष्ठम् दृश्य

(कानपुर का बेलेरियो होटल)

[डांस]

आफिसर : इतनी जिल्लत उठाने पर भी आजाद आज तक हाथ नहीं आया । सुना है बहुत जल्द सरकार और कांग्रेस में सुलह होने वाली है । हिन्दुस्तान की तकदीर खुलने वाली है । अगर आजाद को इससे पहिले न पकड़ लिया गया तो .

[एक खुफिया के आदमी का प्रवेश]

आफिसर क्या हुआ मुस्तफा ? कोई अच्छी खबर ?

मुस्तफा अब पौ बारह हैं सरकार । बड़ी मुश्किल से नेता जी दस हजार रुपये पर आजाद को पकड़वाने के लिए राजी हुए हैं । अब देर करने की जरूरत नहीं है । उनका कहना है कि आजाद दो तीन दिन के अन्दर ही इलाहाबाद पहुँचने वाला है । हमको जल्द ही —

आफिसर मगर —

- नेताजी बन्दे डिण्टी साहब । आप कुशल से तो है ?
- आफिसर अजी सब आपकी मेहरबानी है । अरे कोई है, पण्डित जी के लिये चाय नाश्ता लाओ ।
- पण्डित जी : आप क्यों कष्ट कर रहे हैं डिण्टी साहब । मैं तो—
- आफिसर : अरे साहब, आप जैसे नेता मेरे घर पर पधारे और हम—
- नेताजी : मैं तो चाय का सेवन नहीं करता । गाँधी जी भी चाय नहीं पीते । आप जानते हैं मैं तो गान्धीजी के सिद्धान्तों पर चलने वाला आदमी हूँ ।
- आफिसर : अरे साहब मैं तो खुद गान्धीजी का भक्त हूँ । गान्धीजी ही इस मुल्क को आजाद करेंगे ।
- नेताजी मैं तो हिंसात्मक आन्दोलन को सिर्फ डाकुओं और लुटेरों की सस्था मानता हूँ । इससे तो हमारी आजादी की लड़ाई को नुकसान ही पहुँचता है ।
- आफिसर मैं तो साहब आपके जजबातों की तारीफ करता हूँ । आप जैसे दस-पाँच आदमी भी

अगर कांग्रेस में हों तो स्वराज्य मिलने में देर न लगे ।

(नेता जी प्रसन्न हो जाते हैं)

आफिसर

फिर अब आज्ञा ?

नेताजी

हमको सुबह ही इलाहाबाद के लिए रवाना हो जाना पड़ेगा । आपभी सबेरे ही रवाना हो जायेंगे । मैं आपको कहा—मैं कहा मिलूँ आपसे ?

आफिसर

अगर आपको कोई तकलीफ न हो तो मैं पुलिस क्लब में आपको हर वक्त मिलूँगा । वहाँ से हिलूँगा भी नहीं ।

नेताजी

: अच्छा तो फिर इजाजत दीजिये । मुझे आज ही प्रयाग को जाना पड़ेगा । मगर देखिए—

आफिसर

. हाँ हाँ कहिए ।

नेताजी

. देखिए एक तो मेरा इनाम और दूसरे मेरी प्रतिष्ठा ।

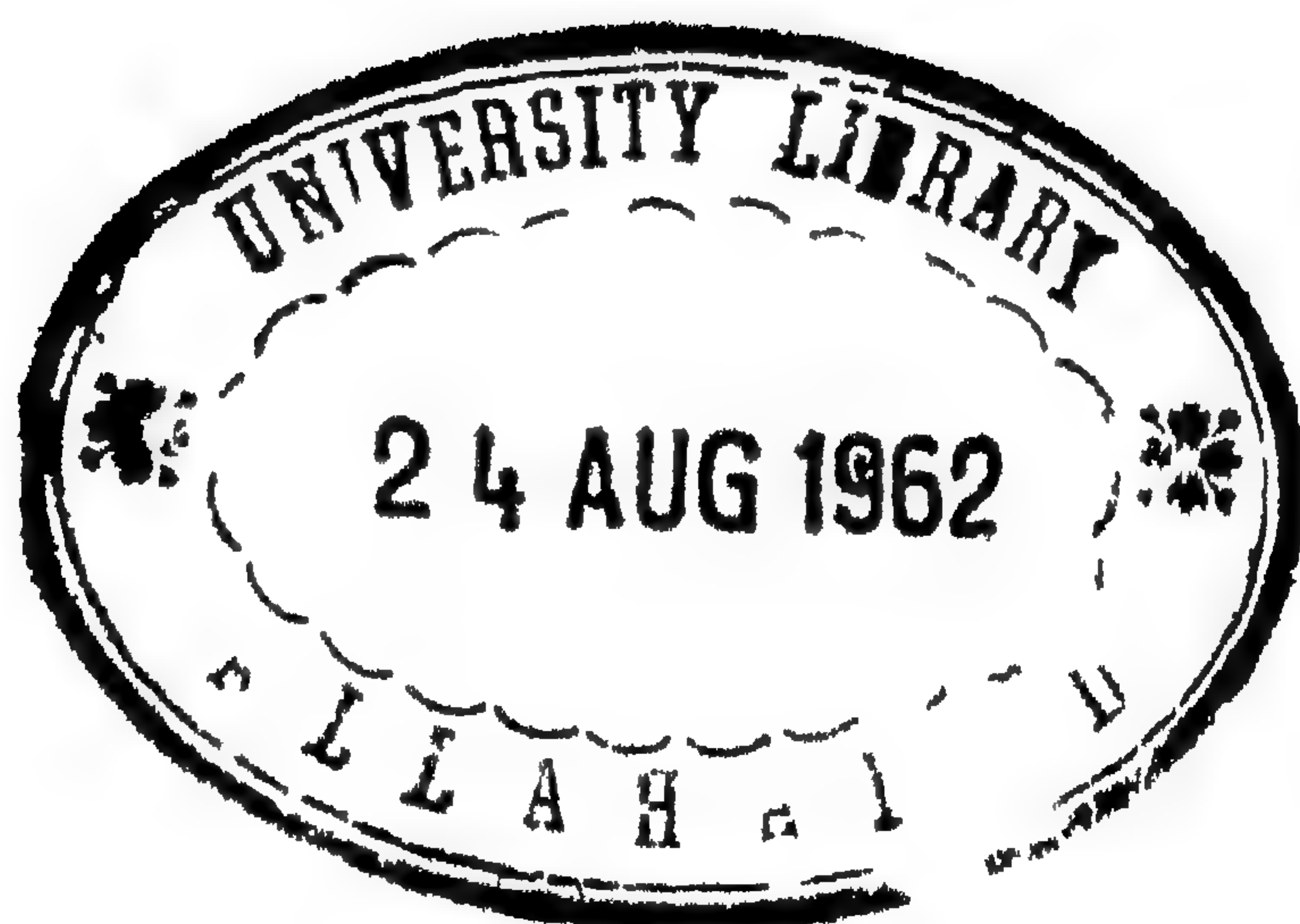
आफिसर

इसकी आप जरा भी चिन्ता न करें पण्डित जी । मैं कहता हूँ कि इनाम ही क्या आप जो भी मागेँगे सरकार वह

आपको देगी। आप खुश हो जायेंगे। आपकी जिन्दगी भी सुधर जायगी और नेता भी बने रहेंगे। आपका नेता ही बने रहना सरकार के लिए हमेशा मुफीद रहेगा।

नेताजी
आफिसर

अच्छा तो फिर मैं जाता हूँ।
। बन्देमातरम् ।



तृतीय अंक

सप्तम् दृश्य

(इलाहाबाद का अल्फ्रेड पार्क)

(आजाद नेता जी के साथ बैठे हुये)

नेताजी

गान्धी जी की लार्ड इर्विन के साथ जो बातचीत चल रही है उससे समझौता नजदीक मालूम पड़ रहा है भइया । आपकी क्या राय है

आजाद

देश की दशा देखते हुए अब समझौता ही हमारे हक में अच्छा रहेगा । अब तो आन्दोलन में काफी शिथिलता भी आ चली है ।

नेताजी

लेकिन आपका प्रोग्राम

आजाद

मैं यहाँ से दक्षिण जा रहा हूँ अब । अब अपने कार्य का केन्द्र दक्षिण भारत को ही बनाना पड़ेगा । अपने आन्दोलन का फिर से नये रूप से संचालन करना पड़ेगा ।

नेताजी
आजाद

. मैं आपके साथ ही चलूँगा भइया ।
: तुम मेरे सबसे विश्वस्त सैनिक हो पडित ।
तुमको तो साथ ही रखना है । कल शाम
की गाडी से हम लोग अहमदाबाद के
लिए रवाना होजायेंगे । तुम तैयार
रहना ।

नेताजी
आजाद

मैं तो हमेशा आपके लिए जान देने को
तैयार रहता हूँ भइया । मेरे होते—
: मुझे तुम पर ऐसा ही विश्वास है ।

[थोड़ी देर दोनों चुप रहते हैं]

नेताजी

आप यही ठहरे भइया । मैं आध घण्टे में
तैयार होकर आता हूँ ।

आजाद

. मगर देर मत लगा देना पण्डित ।

नेताजी

: आध घण्टे के अन्दर आ जाऊँगा भइया ।
आप मेरी प्रतीक्षा अवश्य ही करें । चले
न जायें ।

आजाद

: अच्छा ।

[नेता जी चले जाते हैं]

आजाद

. सच पूछो तो अब मैं भी कुछ थक गया
हूँ । सोचता हूँ कि थोड़े समय के लिए
कही विश्राम कर लूँ मगर—विश्राम

क्या ? साथी सब अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुके । अब मैं भी उसी मार्ग पर जाने का न जाने क्यों बड़ा ही इच्छुक हो रहा हूँ । पार्टी भङ्ग हो गई है । अब मैं ही नेता हूँ और मैं ही पार्टी । मगर मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ । देश के लिये कोई बड़ा भारी काम करके ही मरना पड़ेगा ।

[थोड़ी देर चुप रहते हैं]

मगर काफी देर हो चली । अभी पण्डित नहीं आया । बेचारा सीधा सादा और मेरा भक्त आदमी है । मुझ पर उसका अटल विश्वास है, मगर अब तो काफी देर हो गई ।

[उठकर टहलने लगता है]

[सहसा सामने से कुछ सिपाही दिखलाई पड़ते हैं]

पुलिस ? आज इतनी पुलिस क्यों दिखलाई पड़ रही है । मेरे आने की बात तो किसी को मालूम नहीं हो सकती । मैं इलाहाबाद में हूँ यह मेरे और पण्डित के सिवा और कोई जानता भी नहीं फिर—

[चारो ओर पुलिस दिखलाई पडने लगती है]
 ओह, सँभल जा आजाद । यह पुलिस
 अवश्य ही तेरे ही लिये यहा आई है ।
 मगर—हा हा हा । आजाद को पकडना
 कोई साधारण काम नहीं है । आओ—
 आज तुम लोगो को भी मौत के घाट
 उतारना होगा ।

[आजाद सँभलकर खडा होता है और रिवाल्वर सँभाल लेता है]
 [पुलिस की भीड के साथ नाटबावर का प्रवेश]

आजाद दूर ही रहना कुत्तो । एक कदम आगे
 बढ़ाते ही तुमको कुत्तो की मौत मरना
 पड़ेगा ।

नाटबावर बस अब हथियार धर दो आजाद । आज
 तुम जिन्दा यहाँ से निकलकर न भाग
 सकोगे । रख दो हथियार ।

[आजाद ठहाका लगाता है]

आजाद आज आप भी अपनी ताकत आजमा लें
 नाटबावर साहब । आप आजाद को
 जिन्दा न पकड सकोगे होशियार

[रिवाल्वर चलाता है । पुलिस भी गोलिया चलाती है । घण्टे
 भर तक दोनों ओर से गोलिया चलती है । अन्त मे आजाद 'बन्दे-
 मातरम्' कह कर गिर जाता है ।

[नाटबावर और पुलिस बहुत डरती हुई उसके नजदीक आती है
 पास जाकर तीन चार फायर और लाश पर करती है]